उतरकांड २

उत्तर०
१

॥ई०॥श्रीमतेरामानुजायनमः॥ केकीकंठाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिन्हंसोभाढ्यंपीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्र
सन्नं॥ पाणौनाराचचापंकपिनिकरयुतंवंधुनासेव्यमानंनौमीड्यंजानकीशंरघुवरमनिसंपुष्पकारूढरामं॥१॥ कोशलेंद्र
पदकंजमंजुलौकमलजोनिमहेशवंदितौ॥ जानकीकरसरोजलालितौचिंतकस्यमनभृंगसंगिनौ॥२॥ कुंदइंदिवरगौरसुंदरंअं
विकापतिमभीष्टमंदिरं॥ कारुणीककलकंजलोचनंनौमिसंकरमनंगमोचनं॥३॥दो॥ रहाएकदिनअवधिकरअतिआरतपुर
लोग॥ जहंतहंसोचहिनारिनरकृसतनरामवियोग॥दो॥ सगुणहोहिसुंदरसकलमनप्रसन्नसवकेर॥ प्रभुआगमनजना
इ७नगररम्यचहुफेर॥दो॥ कौशल्यादिकमातुसवमनआनंदअसहोइ॥ आएप्रभुश्रीअनुजजुतकहनचहतअंकोइ॥ व
दो॥ भरतनयनभुजदक्षिनफरकतवारहिवार॥ जानिसगुणमनहर्षअतिलागेकरनविचार॥४॥चौ॥ रहाएकदिनअव
धिअधारा॥ समुझतमनदुखभए७अपारा॥ कारनकवननाथनहिआए॥ जानिकुटिलकिधौमोहिविसराए॥ अहहधन्यलछि राम
मनवड़भागी॥ रामपदारविंदअनुरागी॥ कपटिकुटिलमोहिप्रभुचीन्हा॥ ताते नाथसंगनहिलीन्हा॥ जोकरनीसमुझैप्रभुमोरी १
नहिनिस्तारकलपशतकोरी॥ जनऔगुनप्रभुमाननकाऊ॥ दीनवंधुअतिमृदुलसुभाऊ॥ मोरेजियभरोसदृढहोई॥ मिलिह
हिरामसगुणसुभहोई॥ वीतेअवधिरहैजौप्राना॥ अधमकवनजगमोहिसमाना॥दो॥ रामविरहसागरमहभरतमगनमनहो

त॥विप्ररूपधरिपवनसुतआइगएजनुपोत॥१॥दो॥वैठेदेषिकुशासनजटामुकुटकृशगात॥रामरामरघुपतिजपतश्रवतनैनजलजा
त॥२॥चौ॥देषतहनुमानअतिहरषे॥पुलकगातलोचनजलवरषे॥मनमहवहुतभांतिसुखमानी॥वोलेश्रवनसुधासमवानी॥जासु
विरहसोचहुदिनराती॥रटतनिरंतरगुनगणपाती॥रघुकुलतिलकसुजनसुखदाता॥आएकुशलदेवमुनित्राता॥रिपुरणजीतसुज
ससुरगावत॥सीतासहितअनुजप्रभुआवत॥सुनतवचनविसरेसवदूखा॥तृषावंतजिमिपाइपियूषा॥कोतुमतातकहातेआए॥मो
हिपरमप्रियवचनसुनाए॥मारुतसुतमैकपिहनुमाना॥नाममोरसुनुकृपानिधाना॥दीनवंधुरघुपतिकरकिंकर॥सुनतभरतभेटेउ
ठिसादर॥मिलतप्रेमनहिहृदयसमाता॥नयनश्रवतजलपुलकितगाता॥कपितवदरससकलदुखवीते॥मिलेआजुमोहिरामपिरीते
वारवारपूछीकुशलाता॥तुमकहदेउंकाहसुनुभ्राता॥इहिसंदेससरिसकछुनाही॥देषेउंकरिविचारमनमाही॥नाहिनतातउरिण
मैतोही॥अवप्रभुचरितसुनावहुमोही॥तवहनुमंतनायपदमाथा॥कहीसकलरघुपतिगुणगाथा॥कहुकपिकवहिकृपालगुसां
ई॥सुमरहिमोहिदासकीनाई॥छं॥निजदासज्योरघुवंशभुषनकवहुममसुमिरनकरयो॥सुनिभरतवचनविनीतअतिकपिपुलकि
तनचरननपरयो॥रघुवीरनिजमुखजासुगुणगनकहतअगजगनाथजो॥काहेनहोहिविनीतपरमपुनीतसदगुणसिंधसो॥दो॥
रामप्राणप्रियनाथतुमसत्यवचनममतात॥पुनिपुनिमिलतभरतसुनिहरषनहृदसमात॥सोरठा॥भरतचरनसिरुनाइतुरतगएकपि

उत्तर॰ २

रामपहि॥ कहीकुशलसवुजाइहरषिचलेप्रभुजानिबदि॥८॥ चौ॥ हरषिभरतकोशलपुरआए॥ समाचारसवगुरहिसुनाए॥
पुनिमंदिरमहवातजनाई॥ आवतकुशलदेवरघुराई॥ सुनतसकलजननीउठिधाई॥ कहिप्रभुकुशलभरतसमुझाई॥ समाचा
रपुरवासिनपाए॥ नरअरुनारिहरषिसवधाए॥ दधिदुर्वारोचनफलफूला॥ नवतुलसीदलमंगलमूला॥ भरिभरिहेमथारभामि
नी॥ गावतचलींसिंधुरगामिनी॥ जोजैसेहितैसेहिउठिधावहि॥ वालवृद्धकहुसंगनलावहि॥ एकएकसनवूझहिभाई॥ तुम
देषेदयालरघुराई॥ अवधिपुरीप्रभुआवतजानी॥ भईसकलसोभाकैषानी॥ वहैसुहावनत्रिविधसमीरा॥ भईसरजूअतिनिर्म
लनीरा॥ दो॥ हरषितगुरपरिजनअनुजभूसुरवृंदसमेत॥ चलेभरतमनप्रेमअतिसनमुखकृपानिकेत॥ दो॥ वहुतकचढीअ
टारिन्हनिरषहिगगनविमान॥ देषिमधुरसुरहरषअतिकरहिसुमंगलगान॥ दो॥ राकाशशिरघुपतिपुरीसिंधुदेषिहरषा
न॥ वढोकोलाहलकरतजनुनारितरंगसमान॥ चौ॥ इहाभानुकुलकमलदिवाकर॥ कपिन्हदिषावतनगरमनोहर॥ सुनुकपीस राम
अंगदलंकेशा॥ पावनपुरीरुचिरयहदेशा॥ जद्यपिसववैकुंठवषाना॥ वेदपुराननविदितजगजाना॥ अवधिपुरीसमप्रियनहिसोऊ २
यहप्रसंगजाननहैकोऊ॥ जन्मभूमिममपुरीसुहावन॥ उत्तरदिसिवहसरजूपावनि॥ जामज्जनतेविनाहिप्रयासा॥ ममसमीपन
रपावहिवासा॥ अतिप्रियमोहिइहाकेवासी॥ ममधामदापुरीसुखरासी॥ हरषेसवकपिसुनिप्रभुवानी॥ धन्यअवधजोरामवषानी॥ दो

आवतदेषेलोगसवकृपासिंधभगवान॥नगरनिकटप्रभुप्रेरिउउतराभूमिविमान॥दो॥उतरिकहाप्रभुपुष्पकहंतुम्हकुवेरपहजाहु
प्रेरितरामचलेउसोहरषविरहअतिताहु॥२३॥चौ॥आएभरतसंगसवलोगा॥कृसतनश्रीरघुवीरवियोगा॥वामदेववसिष्टमुनि
नायक॥देषेप्रभुमहिधरिधनुसायक॥धाइधरेगुरुचरनसरोरुह॥अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह॥भेटीकुसलपूछिमुनिराया॥ह
मरिहिकुसालतुम्हारिहिदाया॥सकलद्विजनमिलिनायोमाथा॥धर्मधुरंधररघुकुलनाथा॥गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज॥नवतजि
न्हहिसुरमुनिशंकरअज॥परेभूमिनहिउठतउठाए॥वरकरिकृपासिंधउरलाए॥स्यामलगातरोमभएठाढे॥नवराजीवनयनज
लवाढे॥छं॥राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलिवनी॥अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलेप्रभुत्रभुवनधनी॥प्रभुमिलत
अनुजहिसोहमोमेजाइनहिउपमाकही॥जनुप्रेमअरुसिंगारतनुधरिमिलतवरपरमालही॥वूझतकृपानिधिकुशलभरतहिवच
नवेगिनआवही॥सुनुशिवासोसुखवचनमनतेभिन्नजाननपावई॥अवकुशलकौशलनाथआरतजानिजनदरसनदियो॥
वूडतविरहवारीसकृपानिधानमोहिकरगहिलियो॥दो॥पुनिप्रभुहरषितशत्रुहनभेटेहृदयलगाई॥लछिमनभरतमिलेतवहिपर
मप्रेमदोउभाइ॥२४॥चौ॥भरतानुजलछिमनतवभेटे॥दुसहविरहसंभवदुखमेटे॥सीताचरनभरतसिरुनाए॥अनुजसमेतपरम
सुखपाए॥प्रभुविलोकिहरषेपुरवासी॥जनितवियोगविपतिसवनासी॥प्रेमाकुलसवलोगनिहारी॥कौतुककीन्हकृपालषरारी॥आमि

तन्हपप्रगटेतिहि काला॥ यथा जोग मिलि सवहि कृपाला॥ कृपा हष्टि रघुवीर विलोकी॥ कि ए सकल नरनारि विसोकी॥ छन महि संवहि
मिले भगवाना॥ उमा मरम यह काहु न जाना॥ एहि विधि सवहि सुखि करराना॥ आगे चले सील गुण धामा॥ कौशल्यादि मातु सव धाई॥ नि
रषि वछ जनु धेनु लवाई॥ छं॥ जनु धेनु वालक वछ तजि ग्रह चरन वन परवस गई॥ दिन अंत पुर रुष श्रवत थन हुंकार करि धावत भई
अति प्रेम प्रभु सव मातु भेटी वचन मृदु वहु विधि कहे॥ गइ विषम विपति वियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे॥ दो॥ भेटे लछिमन सु
मित्रा राम चरण रति जानि॥ रामहि मिलत कैकेइ हृदय वहुत सकुचानि॥ दो॥ लछिमन सव मातन्ह मिले हरषे आसिष पाइ॥ कैकइ कहुं
पुनि प्रभु मिले मन के छोभ न जाइ॥ ६॥ चौ॥ सासुन सवन्हि मिलि वैदेही॥ चरन लगत हरष अति तेही॥ देषि असीस वूझि कुशलाता॥ होउं
अचल तुम्हार अहिवाता॥ सव रघुपति मुख कमल विलोकहि॥ मंगल जानि नयन जल रोकहि॥ कनक थार आरती उतारहि॥ वार वार प्रभु गात
निहारहि॥ नाना भांति निछावरि करही॥ परमानंद हरष उर धरही॥ कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहि॥ चितवत कृपासिंधु रणधीरहि॥ हृदय वि 
चारति वारहि वारा॥ कवनि भांति लंकापति मारा॥ अति सुकुमार जुगल मेरे वारे निसिचर सुभट महावल मारे॥ दो॥ लछिमन अरु सीता स 
हित प्रभुहि विलोकत मात॥ परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गात॥ ७॥ चौ॥ लंकापति कपीस नल नीला॥ जामवंत अंगद
सुभसीला॥ हनुमदादि सव वानर वीरा॥ धरे मनोहर मनुज सरीरा॥ भरत सनेह सील व्रत नेमा॥ सादर सव वरनहि अति प्रेमा॥ देषि नगर

वासिन्हकैरीती॥सकलसराहहिप्रभुपदप्रीती॥पुनिरघुपतिसवसखाबुलाए॥मुनिपदलागङ्गसकलसिषाए॥गुरवसिष्टकुलपूज्यहमा
रे॥इन्हकीकृपादनुजरणमारे॥एसवसखासुनङ्गमुनिमेरे॥भएसमरसागरमङ्गवेरे॥ममहितलागिजनमइन्हहारे॥भरतहुतेमोहिअ
धिकपिआरे॥सुनिप्रभुवचनमगनसवभए॥निमिषनिमिषउपजतसुखनए॥दो॥कौशल्याकेचरनन्हिपुनितिन्हनाइमाथ॥आ
सिषदीन्हिहरषितुमप्रियममजिमिरघुनाथ॥दो॥सुमनवृष्टिनभसंकुलाभवनचलेसुखकंद॥चढीअटारिन्हदेषहिनगरनारिन
रवृंद॥१९॥चौ॥कंचनकलशविचित्रसवारे॥सवहिधरेसुनिनिजनिजद्वारे॥वंदनवारपताकाकेतू॥सवनुवनाएमंगलहेतू॥विथीस
कलसुगंधसिचाए॥गजमनिरचिवङ्गचौकपुराए॥नानाभातिसुमंगलसाजे॥हरषितनगरअनेकवङ्गवाजे॥जहंतहंनारिनिछावरि
करही॥देहिअसीसहरषउरभरही॥कंचनथारआरतीनाना॥जुवतीसजहिकरहिसुभगाना॥करहिआरतिहरषी॥रघुकुलकमल आरती
विपिनदिनकरकी॥पुरसोभासंपतिकल्याना॥निगमसेषसारदावषाना॥तेयहचरितदेषिठगिरहही॥उमातासुगुननरकिमि
कहही॥दो॥नारिकुमुदिनीअवधिसररघुपतिविरहदिनेश॥अस्तभएविकसतभइनिरषिरामराकेश॥दो॥होहिसगुन
सुभविविधिविधिवाजहिगगननिसान॥पुरनरनारिसनाथकरिभवनचलेभगवान॥२१॥चौ॥प्रभुजानीकैकईलजानी॥प्र
थमतासुगृहगएभवानी॥ताहिप्रवोधिवङ्गतसुखदीन्हा॥पुनिनिजभवनगवनहरिकीन्हा॥कृपासिंधजवमंदिर

उत्तर० गए॥ पुरनरनारिसुखीसबभए॥ गुरुवसिष्टद्विजलिएवोलाई॥ आजुघरीसुदिनसुखदाई॥ सवद्विज्जदेहुहषिअनुसासन॥ रा
४ मचंद्रवैठहिसिंहासन॥ मुनिवसिष्टकेवचनसुहाए॥ सुनतसकलविप्रन्हअतिभाए॥ कहहिवचनमृदुविप्रअनेका॥ जगअभिरा
मरामअभिषेका॥ अवमुवरविलंवनहिकीजै॥ महाराजकहतिलककरीजै॥ दो॥ तवमुनिकह्योसुमंत्रसनसुनतचलेहरषा
इ॥ रथअनेकवहुवाजिगजतुरंगसवारेजाइ॥ दो॥ जहंतहंधावकपठइपुनिमंगलद्रव्यमगाइ॥ हरषसमेतवसिष्टपदपुनिसिरनाए
योजाइ॥ २३॥ चौ॥ अवधपुरीअतिरुचिरवनाई॥ देवन्हसुमनवृष्टिझरिलाई॥ रामकहासेवकन्हवुलाई॥ प्रथमसखन्हअन्हवाव
हुजाई॥ सुनतवचजहंतहंजनधाए॥ सुग्रीवादितुरतअन्हवाए॥ पुनिकरुणानिधिभरतहंकारे॥ निजकररामजटानिरवारे॥ अन्हवाए
प्रभुतिन्हिउंभाई॥ भक्तवछलकृपालरघुराई॥ भरतभाग्यप्रभुकोमलताई॥ शेषकोटिशतसकहिनगाई॥ पुनिनिजजटारामविव
राए॥ गुरअनुमासनमानिअन्हाए॥ कारिमज्जनप्रभुभूषणसाजे॥ अंगअनंगदेषिशतलाजे॥ दो॥ सासुन्हसादरजानकिहिमज्ज राम
नतुरतकराई॥ दिव्यवसनवरभूषणअंगअंगसजेवनाई॥ दो॥ रामवामदिसिसोहसोरमारूपगुणषानि॥ देषिमातसवहरषि ४
तवजन्मसुफलनिजजानि॥ दो॥ सुनुषगेसतिहिअवसरब्रह्माशिवमुनिवृंद॥ चढिविमानआएसकलसुरदेषनसुखकंद॥ २६॥ चौ
प्रभुहिदेषिमुनिमनअनुरागा॥ तुरतदिव्यसिंहासनमागा॥ रविसमतेजसुवरिननजाई॥ वैठेरामद्विजन्हसिरनाई॥ जनकसुतासमेतरघुरा

ई॥ पेषि प्रहरषे मुनि समुदाई॥ वेद मंत्र तव द्विज न उरे॥ नभ सुर मुनि जय ति पुकारे॥ प्रथम तिलक वसीष्ट मुनि कीन्हा॥ पुनि सव विप्रन्ह
आयसु दीन्हा॥ सुत विलोकि हरषी महतारी॥ वार वार आरती उतारी॥ विप्रन्ह दान वहुत विधि दीन्हे॥ याचक सकल अयाची की(
न्हे॥ सिंहासन पर त्रिभुवन साईं॥ देषि सुरन्ह दुंदुभी वजाई॥ छं॥ नभ दुंदुभी वाजहिं विपुल गंधर्व किन्नर गावही॥ नाचहिं अपछरा
वृंद परमानंद सुर मुनि पावही॥ भरतादि अनुज विभीषनांगद हनुमदादि समेत ते॥ गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विरा
जते॥ श्री सहित दिनकर वंश भूषण काम वहु छवि सोहई॥ जय अंवुधर वर गात अंवुर पीत मुनि मन मोहई॥ मुकुटांगदादि विचित्र
भूषण अंग अंगन्हि प्रति सजे॥ अंभोज नयन विसाल उर भुज धन्य नर निरषंत जे॥ दो॥ वहु सोभा सुसमाज सुख कहत न वनै षगे
स॥ वरनै सारद सेष श्रुति सो रस जान महेश॥ दो॥ भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम॥ वंदि वेष धरि वेद तव आए जहँ श्रीरा
म॥ दो॥ प्रभु सरवज्ञ कीन्ह अति आदर कृपानिधान॥ लषेउ न काहू मर्म कछु लगे करन गुनगान॥ २९॥ छं॥ जय सगुण निर्गुण रूप रू
प अनूप भूप सिरोमणे॥ दशकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रवल खल भुजवल हने॥ अवतार नर संसार भार विभंजि दारुण दुख दहे॥ जय प्रणतपा
ल दयाल प्रभु संजुक्त शक्ति नमामि हे॥ तव विषम माया वस सुरासुर नाग नर अग जग हरे॥ भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म
गुणनि भरे॥ ये नाथ करि करुणा विलोके त्रिविध दुख ते निर्वहे॥ भव षेद भेदन दक्ष हम कह रक्ष राम नमामि हे॥ ये ज्ञान मान विमत्त तव भ

उत्तर० वहरनिभक्तिनआदरी॥तेपाइसुरदुर्लभपदारथपरतहमदेषतहरी॥विस्वासकरिसबआसपरिहरिदासतवजेह्वैरहे॥जपिनामतव
५ विनुश्रमतरहिभवनाथसोसवरामिहे॥जेचरनसिवअजपूज्यरजसोपूरसिमुनिपतनीतरी॥नषनिर्गतामुनिवंदितात्रैलोकपा
वनसुरसरी॥ध्वजकुलिशअंकुशकंजजुतवनफिरतकविकिनलहे॥पदकंजद्वंद्वमुकुंदरामरमेसनित्यभजामिहे॥अव्यक्त
मूलमनादितरुत्वचचारिनिगमागमभने॥षटकंधसाखापंचवीसअनेकपर्णसुमनाघने॥फलजुगलविधिकटुमधुरवेलिअ
केलिजिहिआश्रितरहे॥पल्लवतफूलतनवलनितसंसारविटपनमामिहे॥जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवगम्यमनपरध्यावही॥तेक
हहुजाननाथहमतवसगुणजसनितगावहीं॥करुणायतनप्रभुसदगुनाकरदेवयहवरमागही॥मनवचनकर्मविकारत
जितवचरणहमअनुरागही॥दो॥सबकेदेषतदेवन्हविनतीकीन्हउदार॥अंतरध्यानभएउपुनिगएब्रह्मआगार॥दो॥वैनतेय
सुनुशंभुतवआएजहरघुवीर॥विनयकरतगदगदगिरापूरितपुलकसरीर॥३॥छं॥जयरामरमारमनंसमनं॥भवतापभयाकु राम
लपाहिजनं॥अवधेससुरेसरमेसविभो॥सरनागतमागतपाहिप्रभो॥दशसीसविनासनवीसभुजा॥कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा॥रज ५
नीचरवृंदपतंगरहे॥सरपावकतेजप्रचंडदहे॥महिमंडलमंडनचारुतरं॥धृतसायकचापनिषंगवरं॥मदमोहमहाममतारजनी॥तवपुंजदि
वाकरतेजअनी॥मनुजादकिरातनिपातकए॥मृगलोगकुभोगसरेणहए॥हितनाथअनाथनिपाहिहरे॥विषयावनपावरभूलिपरे॥

वहुरोगवियोगनिलोगहए॥ वहुदंडिनिरादरकेफलए॥ भवसिंधुअगाधपरेनरते॥ पदपंकजप्रेमनजेकरते॥ अतिदीनमलीनदुखी
नितही॥ जिनकेपदपंकजप्रीतनही॥ अवलंवभगवंतकथाजिन्हके॥ प्रियसंतअनंतसदातिन्हके॥ नहिरागनलोभनमाननमुदा॥ तिन्हके
समवैभववाविपदा॥ इहितेतवसेवकहोतमुदा॥ मुनित्यागतजोगसदोषसदा॥ करिप्रेमनिरंतरनेमलिए॥ पदपंकजसेवतसुद्धहिए॥ सममा
निनिरादरआदरही॥ सवसंतसुखीविचरंतमही॥ मुनिमानसपंकजभृंगभजे॥ रघुवीरमहारणधीरअजे॥ तवनामजपामिनमामि
हरे॥ भवरोगमहामदमानहरे॥ गुणसीलकृपापरमायतनं॥ प्रणमामिनिरंतरश्रीरमणं॥ रघुनंदनिकंदयद्वंद्वघनं॥ महिपालवि
लोकयदीनजनं॥ दो॥ वारवारवरमांगउं हरषिदेहुश्रीरंग॥ पदसरोजअनपायनीभक्तिसदासतसंग॥ दो॥ वरणिउमारामगु
णहरषिगएकैलास॥ तवप्रभुकपिन्हदिवाए सवविधिसुखप्रदवास॥ ३३॥ चौ॥ सुनुषगपतियहकथापावनी॥ त्रयविधितापभवयदा
वनी॥ महीराजकरसुभअभिषेका॥ सुनतलहेनरविरतिविवेका॥ जेसकामनरसुनहिजोगावहि॥ सुखसंपतिनानाविधिपावहि॥ सुरदुर्लभ
सुषकरिजगमाही॥ अंतकालरघुपतिपुरजाही॥ सुनहिविमुक्तविरतिअरुविषई॥ लहहिभक्तिगतिसंपतिनई॥ षगपतिरामकथामैवर
नी॥ सुमतिविलासत्रासदुखहरनी॥ विरतिविवेकभक्तिद्दढकरनी॥ मोहनदीकहुंसुंदरतरनी॥ नितनवमंगलकोशलपुरी॥ हरषितर
हेलोगसवकुरी॥ नितनैप्रीतिरामपदपंकज॥ सवकेजिनहिनवतशिवमुनिअज॥ मागनवहुप्रकारपहिराए॥ द्विजनदाननानावि

धिपाए॥दो॥ परमानंदमगनपीसवकेप्रभुपदप्रीति॥जातनजानेदिवसतिन्हगएमासषटवीति॥२४॥चौ॥विसरेगरहसपनेसुधिनाही
जिमिपरद्रोहसंतमनमाही॥तवरघुपतिसवसखावुलाए॥आइसवन्हिसादरसिरुनाए॥परमप्रीतिसमीपवैठारे॥भक्तसुखदम्रदुव
चनउचारे॥तुम्हअतिकीन्हिमोरिसिवकाई॥मुखपरकिहिविधिकरोवडाई॥तातेतुममोहिअतिप्रियलागे॥ममहितलागिभवननिजत्या
गे॥अनुजराजसंपतिवैदेही॥देहगेहपरिवारसनेही॥सवममप्रियनहितुमहिसमाना॥म्रषानकहौमोरयहवाना॥सवकेप्रियसेवकयह
हनीती॥मोरेअधिकदासपरप्रीती॥दो॥अवग्रहजाहुसखासकलभजिहुमोहिद्रढनेम॥सदासर्वगतसर्वहितजानिकरेहुअतिप्रेम
२५॥चौ॥सुनिप्रभुवचनहरषसवभए॥कोहमकहाविसरितनगए॥एकटकरहेजोरिकरआगे॥सकहिनकहिकछुअतिअनुरागे॥
परमप्रेमतिन्हकरप्रभुदेषा॥कहाविविधिविधिज्ञानविशेषा॥प्रभुसनमुखकछुकहइनपारही॥पुनिपुनिचरनसरोजनिहारही॥तवप्र
भुभूषणवसनमगाए॥नानारंगअनूपसुहाए॥सुग्रीवहिप्रथमहिपहिराए॥वसनभरतनिजहाथवनाए॥प्रभुप्रेरितलछिमनपहिराए॥लं
कापतिरघुपतिमनभाए॥अंगदवैठरहानहिडोला॥प्रीतिदेषिप्रभुताहिनवोला॥दो॥जामवंतनीलादिसवपहिराएरघुनाथ॥हियधरिरा
मसरूपसवचलेनाइपदमाथ॥दो॥तवअंगदउठिनाइसिरुसजलनयनकरजोरि॥अतिविनीतिवोलेवचनमनहुंप्रेमरसवोरि॥२६॥
चौ॥सुनुसरवज्ञक्रपासुखसिंधो॥दीनदयाकरआरतवंधो॥मरतीवेरनाथमुहिवाली॥गयोतुम्हारिहिकोछेघाली॥असरणसरणवि

रदसंभारी॥ मोहि जनितजहु नाथभयहारी॥ मोरेतुमप्रभुगुरुपितुमाता॥ जाउंकहांतजिपदजलजाता॥ तुमहिविचारिकहौनरनाहा॥
प्रभुतजिभवनकाजममकाहा॥ वालकज्ञानबुद्धिवलहीना॥ राषहुसरननाथजैदीना॥ नीचटहलग्रहकीसवकरिहौ॥ पदपंकजविलो
किभवतरिहौ॥ असकहिचरनपरेप्रभुपाही॥ अवजनिनाथकहौग्रहजाही॥ दो॥ अंगदवचनविनीतसुनिरघुपतिकरुणासींव॥ प्रभुउठाइ
उरलाएउसजलनयनराजीव॥ दो॥ निजमनिमालावसनमनि वालितनयपहिराइ॥ विदाकीन्हभगवाननतववहुप्रकारसमुझाइ॥ ३८॥ चौ॥
भरतअनुजसौमित्रसमेता॥ पठवनचलेभक्तकृतचेता॥ अंगदहृदयप्रेमनहिथोरा॥ फिरिफिरिचितवरामकीवोरा॥ वारवारकरकरदंडप्रना
मा॥ मनअसरहनकहैमोहिरामा॥ रामविलोकनिवोचनिचलनी॥ सुमिरिसुमिरिसोचनहंसिमिलनी॥ प्रभुरुषदेषिविनयवहुभाषी॥ चले
हृदयपदपंकजराषी॥ अतिआदरसवकपिपहुचाए॥ भाइन्हसहितभरतपुनिआए॥ तवसुग्रीवचरनगहिनाना॥ भांतिविनयकीन्हीहनुमाना॥
दिनदसकेरिरघुपतिपदसेवा॥ पुनितवचरणदेषिहौदेवा॥ पुन्यपुंजतुमपवनकुमारा॥ सेवहुजाइकृपाआगारा॥ असकहिकपिसवचलेतु
रंता॥ अंगदकहैसुनहुहनुमंता॥ दो॥ कहेहुदंडवतप्रभुसनतुमहिकहौकरजोरि॥ वारवाररघुनायकहिसुरतिकराएहुमोरि॥ दो॥ असकहि
चलेउवालिसुतफिरिआएहानिवंत॥ तासुप्रीतिप्रभुसनकहीमगनभयेभगवंत॥ दो॥ कुलिसहुचाहिकठोरअतिकोमलकुसुमहुचाहि॥ चरितष
गेसुररामकेसमुझिपरैकहुकाहि॥ ४०॥ चौ॥ पुनिकृपाललिएवोलिनिषादा॥ दीन्हेभूषणवसनप्रसादा॥ जाहुभवनममसुमिरनकरहु॥ मनक्रम

उत्तर वचनधर्मअनुसरहू॥तुममसखाभरतसमभ्राता॥सदारहोपुरआवतजाता॥वचनसुनतउपजासुखभारी॥परेचरणभरिलोचनवारी॥च
७ रननलिनउरधरिगृहआयो॥प्रभुसुभावपरिजनन्हसुनायो॥रघुपतिचरितदेखिपुरवासी॥पुनिपुनिकहैधन्यसुखरासी॥रामराजवैठे
त्रयलोका॥हरषितभएगएसवसोका॥वैरुनकरकाहूसनकोई॥रामप्रतापविषमताषोई॥दो॥वरणाश्रमनिजनिजधरमनिरतवेदपथलो
ग॥चलहिसदासुखपावहिनहिभवसोकनरोग॥४२॥चौ॥दैहिकदैविकभौतिकतापा॥रामराजकाहूहिनहिव्यापा॥सवनरकरहिपरसपरप्री
ती॥चलहिसुधर्मनिरतश्रुतिनीती॥चारिउवर्णधर्मजगमाही॥पूरिरहासपनेहुअघनाही॥रामभक्तिरतनरअरुनारी॥सकलपरमग
तिकेअधिकारी॥अल्पमृत्युनहिकवनिउपीरा॥सवसुंदरसवविरुजसरीरा॥नहिदरिद्रकोउदुखीनदीना॥नहिकोउअवुधनलछ्छनही
ना॥सवनिर्दंभधरमरतमुनी॥नरअरुनारिचतुरसवगुनी॥सवगुणज्ञसवपंडितज्ञानी॥सवकृतज्ञनहिकपटसयानी॥दो॥रामराजनष
गेससुनिसचराचरजगमाहि॥कालकर्मसुभावगुणकृतदुखकाहूहिनाहि॥४३॥चौ॥भूमिसत्पसागरमेषला॥एकभूपरघुपतिकोशला॥भु राम
वनअनेकरोमप्रतिजासू॥यहप्रभुताकछुवहुतनतासू॥सोमहिमासमुझतप्रभुकेरी॥यहवरणतहीनताघनेरी॥सोमहिमाषगेसजिन्हजा ७
नी॥फिरिइन्हचरिततिन्हहुरतिमानी॥सोजानेकरफलयहलीला॥कहहिमहामुनिवरदसुसीला॥रामराजकरसुखसंपदा॥वरणीनसक
फणीससारदा॥सवउदारसवपरउपकारी॥विप्रचरनसेवकनरनारी॥एकनारिरतव्रतसवझारी॥तेमनक्रमवचपतिहितकारी॥दो॥दंडपतिन्ह

करभेद करभेद जहं नृत्यक नृत्य समाज॥ जितहुं मनअस सुनिय जग रामचंद्र के राज॥२४॥ चौ॥ फूलहि फलहि सदा गिरि कानन॥ रहहि
एक संग गज पंचानन॥ षग मृग सहज वयरु विसराई॥ सबन्ही परसपर प्रीति वढाई॥ कुजहि षग मृग नाना वृंदा॥ अभय चरहि वन करहि अ
नंदा॥ सीतल सुरभि पवन वह मंदा॥ गुंजत अलि लिचलै मकरंदा॥ लताविटप मागे मधु चवई॥ मन भावतो धेनु पय स्रवई॥ सासि संपन्न सदा रह ध
रनी॥ त्रेता भै कृतजुग के करनी॥ प्रगटी गिरिन्ह विविधि मणि षानी॥ जगदातमा भूप जग जानी॥ सरिता सकल वहहि वर वारी॥ सीतल अमल स्वा
द सुखकारी॥ सागर निज मरजादा रहही॥ डारहि रतन तटहि नर लहही॥ सरसिज संकुल सकल तडागा॥ अति प्रसन्न दसु दिसा विभागा॥ दो॥ वि
धु महि पुर पीयूष करि रवि तप जितनु हि काज॥ मागे वारिद देहि जल रामचंद्र के राज॥२५॥ चौ॥ कोटिन्ह वाजिमेध प्रभु कीन्हे॥ दान अनेक द्विज
न्ह कह दीन्हे॥ श्रुति प्रतिपालक धर्म धुरंधर॥ गुणातीत अरु भोग पुरंदर॥ पति अनुकूल सदा रह सीता॥ सोभा षानी सुसील विनीता॥ जान
ति कृपासिंधु प्रभुताई॥ सेवति चरन कमल मनु लाई॥ जद्यपि ग्रह सेवक सेवकिनी॥ विपुल सकल सव विधि अति गुनी॥ निज कर ग्रह परिचर
रजा करई॥ रामचंद्र आयसु अनुसरई॥ जिहि विधि कृपासिंधु सुख मानै॥ सो करसिय सेवा विधि जानै॥ कौशल्यादि सासु ग्रह माही॥ सेवइ
सवही मान मद नाही॥ उमा रमा ब्रह्मादि वंदिता॥ जगदंवा संततमनंदिता॥ दो॥ जा की कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितव न सोइ॥ राम पदारविंद
रति करति सुभावहि षोई॥२६॥ चौ॥ सेवहि सानुकूल सव भाई॥ राम चरन रत अति अधिकाई॥ प्रभु मुख कमल विलोकत रहही॥ कवहुं कृ

उत्तर० पालहमहिकछुकहही॥ रामकरहिभ्रातन्हपरप्रीती॥ नानाभांतिसिषावहिनीती॥ हरषितरहहिंनगरकेलोगा॥ करहिसकलसुरदुर्लभ
८ भोगा॥ अहनिसिविधिहिमनावतरहही॥ श्रीरघुवीरचरनरतिरहही॥ दुइसुतसुंदरसीताजाए॥ लवकुशवेदपुरानन्हगाए॥ दोउवि
जइविनइगुणमंदिर॥ हरिप्रतिव्यंवमनहुंअतिसुंदर॥ दुइदुइसुतसवभ्रातनकेरे॥ भएरूपगुणशीलघनेरे॥ दो॥ ज्ञानगिरागोतीत
तअजमायामनगुणपार॥ सोईसचीदानंदघनकरनरचरितउदार॥ ४७॥ चौ॥ प्रातकालसरजूकरमज्जन॥ वैठहिसभासंग
द्विजसज्जन॥ वेदपुरानवसिष्टवषानहीं॥ सुनहिरामजद्यपिसवजानहि॥ भरतशत्रुघनदोउभाई॥ सहितपवनसुतउपवनजाई॥
वूझहिवैठिरामगुणगाहा॥ कहहनुमानसुमतिअवगाहा॥ सुनतविमलगुणअतिसुखपावहि॥ वहुरिवहुरिवहुरिकहिविनयक
ह्यवहि॥ सवकेगृहगृहहोइपुराना॥ रामचरितपावनविधिनाना॥ नरअरुनारिरामगुणगावहि॥ करहिंदिवसनिसिजातनजानहि॥ दो
अवधपुरीवासिन्हकरसुखसंपदासमाज॥ सहसशेषनहिकहिसकहिजहंनृपरामविराज॥ ४८॥ चौ॥ नारदादिसनकादिमुनी राम
सा॥ दरसनलागिकोशलादीसा॥ दिनप्रतिसकलअवधपुरआवहि॥ देषिनगरुविरागविसरावहि॥ जातिरूपमनिरचितअटारी॥ ना ८
नारंगरुचिरगढारी॥ पुरचहुपासकोटअतिसुंदर॥ रचेकगूरारामरंगवर॥ नवग्रहनिकरअनीकवनाई॥ जनुघेरीअमरावतिआई॥
महिवहुरंगरचितगचकाचा॥ जोविलोकिमुनिवरमनुराचा॥ धवलधाममउपरनभचुंवत॥ कलसमनहुंरविससिद्युतिनिंदत॥ वहुम

णिरचित रुरोषाम्त्रातहि॥ग्रहग्रहप्रतिमणि दीपविराजहि॥छं॥मणि दीपराजहि भवनभ्राजहि देहरीविद्रुमरची॥मणिषंभभीतिवि
रंचिविरचितकनकमणिमरकतषची॥सुंदरमनोहरमंदिरायतअजिररुचिरफटिकरचे॥प्रतिद्वारद्वारकपाटपुरटवनाइवहु
वज्रनिषचे॥दो॥चारुचित्रसालाग्रहन्हग्रहप्रतिलिषेवनाइ॥रामचरित्रजेनिरषतेमुनिमनलेहिचुराइ॥५९॥चौ॥सुमनवाटि
कासवहिंलगाई॥विविधिभांतिकरिजतनवनाई॥लतालतिलवहुजातिसुहाई॥फूलहिसदावसंतकीनाई॥गुंजतमधुकरनिक
रमनोहर॥मारुतत्रिविधसदावहसुंदर॥नानाषगवालकन्हजियाए॥वोलतमधुरउडानसुहाए॥मोरहंससारसपारावत॥भवन
न्हिपरसोभाअतिपावत॥जहंतहं देषहिनिजपरिछाही॥वहुविधिकूजहिनृत्यकराही॥सुकसारिकापढावहि वालक॥कहहुरामरघुपतिजनपालक॥राजदुवारसकसकलविधिचारू॥वीथीचौहटरुचिरवजारू॥छं॥वाजाररुचिरनवनैवरनतवस्तुविनुगथ
पाइयै॥जहभूपरमानिवासतहंकिसंपदाकिसंपदाकिमिगाइयै॥वैठेवजाजसराफवनिकअनेकमनहुकुवेरते॥सवसुखीसवस
च्चरितसुंदरनारिनरसिसुजरठजे॥दो॥उत्तरदिसिसरजूवहैनिर्मलजलगंभीर॥वाधेघाटमनोहरास्वल्पपंकनहितीर॥५०॥चौ॥दूरि
फराकरुचिरसोघाटा॥जहजलपिअहिवाजिगजठाठा॥पनिघटपरमनोहरनाना॥तहांनपुरुषकरहिअस्नाना॥राजघाटसवविधि म२
सुंदरवर॥मज्जहितहावरनचारिउनर॥तीरतीरदेवन्हकेमंदिर॥चहुदिसितिन्हकेउपवनसुंदर॥कहुंकहुंसरितातीरउदासी॥वसहि

उतर० ९ ज्ञानरतमुनिसन्यासी॥ तीरतीरतुलसीकासोहाई॥ वृंदवृंदवहुमुनिन्हलगाई॥ पुरसोभाकछुवरनिनजाई॥ वाहिरनगरपरमरुचिराई॥ देषत
पुरीअखिलअघभागा॥ वनउपवनवाटिकातडागा॥ छं॥ वापीतडागअनूपकूपमनोहरायतसोहही॥ सोपानसुंदरनीरनिर्मलदेषिसुरनरमो
हही॥ वहुरंगकंजअनेकषगकूजारहिमधुपगुंजारही॥ आरामरम्यपिकादिषगरवजनुपथिकहंकारही॥ दो॥ रमानाथजहराजकर
सोपुरवरणिकिजाइ॥ अणिमादिकसुखसेंपदारहीअवधिसवछाइ॥ पर॥ चौ॥ जहंतहंनररघुपतिगुणगावही॥ वैठिपरसपरइहइसिषावहि
भजहुप्रणतप्रतिपालकरामही॥ सोभासीलरूपगुणधामही॥ जलजविलोचनस्यामलगातहि॥ पलकनयनइवसेवकत्रातहि॥ धृतसररु
चिरचापतुनीरहि॥ संतकंजवनरविरणधीरहि॥ कालकरालव्यालषगराजहि॥ नमतरामअकाममममताजहि॥ लोभमोहम्रगजूथकिरातहि
मनसिजकरिहरिजनसुखदातहि॥ संसयसोकनिविडतमभानुहि॥ दनुजगहनघनदहनकृसानुहि॥ जनकसुतासमेतरघुवीरहि॥ कर
सनभजहुभंजनभवभीरहि॥ वहुवासनामसकहिमरासिहि॥ सदाएकरसअजअविनासिहि॥ मुनिरंजनभंजनभवभारहि॥ तुलसि राम ९
दासकेप्रभुहिउदारहि॥ दो॥ इहिविधिनगरनारिनरकरहिरामगुणग्राम॥ सानकूलसवपररहहि॥ संततकृपानिधान॥ पर॥ चौ॥ जवतेराम
प्रतापषगेसा॥ उदितभएअतिप्रवलदिनेसा॥ पूरिप्रकासरह्योतिहुंलोका॥ वहुतनसुखवहुतनमनसोका॥ जिन्हहिसोकतेकहोंव
षानी॥ प्रथमअविद्यानिसानसानी॥ अघउलूकजहतहांलुकाने॥ कामक्रोधकैरवसकुचाने॥ विविधकर्मगुणकालसुभाउ॥ येचक

रसुखलहैनकाऊ॥मत्सरमाननमोहमदचोरा॥इन्हकररहननकवनिहुंवोरा॥धर्मतडागज्ञानविज्ञाना॥येपंकजविकसेविधिनाना॥सु॰
खसंतोषविरागविवेका॥विगतसोकएकोकअनेका॥दो॥यहप्रतापरविजाकैंउरजवकरैप्रकास॥पछिलेवाढहिप्रथमजेकहेशुपावहि
नास॥५३॥चौ॥भ्रातनसहितरामएकवारा॥संगपरमप्रियपवनकुमारा॥सुंदरउपवनकुमारा॥सुंदरउपवनदेषनगए॥सवतरुकुसमितप॰
पल्लवनए॥जानिसमयसनकादिकआए॥तेजपुंजगुणसीलसुहाए॥व्रह्मानंदसदालयलीना॥देषतवालकवहुकालीना॥रूपधरेज
नुचारिउवेदा॥समदरसीमुनिविगतविभेदा॥आसावसनव्यसनयहतिनही॥रघुपतिचरितहोंहितहंसुनही॥तहांरहैसनकादिभवानी॥जह
घटसंभवमुनिवरज्ञानी॥रामकथामुनिवरवहुवरनी॥ज्ञानजोनिपावकजिमिअरनी॥दो॥देषिराममुनिआवतेहरषिदंडवतकीन्ह॥स्वाग
तपूछिपीतपटप्रभुवैठनकहदीन्ह॥५४॥चौ॥कीन्हदंडवततीनिउभाई॥सहितपवनसुतसुखअधिकाई॥मुनिरघुपतिछविअतुलविलोकी॥भ॰
भएमगनमनसकेनरोकी॥स्यामलगातसरोरुहलोचन॥सुंदरतामंदिरभवमोचन॥एकटकरहेनिमेषनलावहि॥प्रभुकरजोरेसीसनवावहि
तिन्हकीदसादेषिरघुवीरा॥श्रवतनयनजलपुलकसरीरा॥करगहिप्रभुमुनिवरवैठारे॥परममनोहरवचनउचारे॥आजुधन्यमैसुनहुमुनी
सा॥तुमरेदरसजाहिअघषीसा॥वडेभागपाइयसतसंगा॥विनहिप्रयासहोहिभवभंगा॥दो॥संतसंगअपवर्गकरकामीभवकरपंथ॥कहैसंतक
विकोविदश्रुतिपुरानसदग्रंथ॥५५॥चौ॥मुनिप्रभुवचनहरषिमुनिचारी॥पुलकिततनअस्तुतिअनुसारी॥जयभगवंतअनंतअनामय॥अ॰

उत्तर० अनघ अनेक एक करुणामय॥ जय निर्गुण जय जय गुणसागर॥ सुखमंदिर सुंदर अति नागर॥ जय इंदिरा रमण जय भूधर॥ अनुपम अज
१० अनादि सोभाकर॥ ज्ञाननिधान अमान मानप्रद॥ पावन सुजस पुरान वेद वद॥ तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन॥ नाम अनेक अनाम निरंजन॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय॥ वससि सदा हम कहुं प्रतिपालय॥ द्वंद्व विपति भव फंद विभंजय॥ हृदि वसि राम काम मद गंजय॥ दो॥ परमानंद कृ
पायतन मन परिपूरण काम॥ प्रेम भक्ति अनपायनी हमहि देहु श्रीराम॥५८॥ चौ॥ देहु भक्ति रघुपति पावनी॥ त्रिविधि ताप भव दोष नसावनी॥
प्रणत काम सुरधेनु कलपतरु॥ होइ प्रसन्न प्रभु दीजइ यह वरु॥ भव वारिधि कुंभज रघुनायक॥ सेवत सुलभ सकल सुखदायक॥ मन सम्भ
व दारुण दुखदारय॥ दीनबंधु समता विस्तारय॥ आस त्रास इरिषादि निवारक॥ विनय विवेक विरति विस्तारक॥ भूप मौलि मणि मंडल
धरनी॥ देहि भक्ति संसृति सरि तरनी॥ मुनि मन मानस हंस निरंतर॥ चरण कमल वंदित अज शंकर॥ रघुकुल केतु सेतु श्रुति रक्षक॥ काल कर्म
सुभाव गुण भक्षक॥ तारण तरण हरण सब दूषण॥ तुलसीदास प्रभु त्रिभुवन भूषण॥ दो॥ वार वार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ॥ ब्रह्म भुवन स राम
नकादि गे अति अभीष्ट वरु पाइ॥५७॥ चौ॥ सनकादिक विधि लोक सिधाए॥ भ्रातन राम चरन सिरु नाए॥ पूछत प्रभुहि सकल सकुचाही॥ चितव १०
हिं सब मारुतसुत पाही॥ सुनी चहे प्रभु सुख कै वानी॥ जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी॥ अंतरजामी प्रभु सब जाना॥ बूझत कहहु काह हनुमाना॥ जोरि
रि पानि कह तब हनुमंता॥ सुनहु दीन पालक भगवंता॥ नाथ भरत कछु पूछन चहहीं॥ प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं॥ तुम जानहु कपि मोर सु

भाजु॥भरतहिमोहिकछुअंतरकाऊ॥सुनिप्रभुबचनभरतगहिचरना॥सुनहुनाथप्रणतारतिहरणा॥दो॥नाथनमुहिसंदेहकछुसपने
हुंसोकनमोह॥केवलकृपातुम्हारिहिकृपानंदसंदोह॥५८॥चौ॥करौंकृपानिधिएकढिठाई॥मैंसेवकतुमजनसुखदाई॥संतनकी
महिमारघुराई॥बहुविधिवेदपुराननगाई॥श्रीमुखतुम्हपुनिकीन्हबडाई॥तिन्हपरप्रभुहिप्रीतिअधिकाई॥सुनाचहौंप्रभुतिन्हके
लछण॥कृपासिंधुगुणज्ञानविचछण॥संतअसंतभेदविलगाई॥प्रणतपालमुहिकहहुबुझाई॥संतनकेलछनसुनुभ्राता॥अगिनिति
श्रुतिपुराणविष्याता॥संतअसंतनकीअसिकरनी॥जिमिकुठारचंदनआचरनी॥काटैपरसुमलयसुनुभाई॥निजगुणदेइसुगंधवसाई॥
दो॥तातेसुरसीसन्हचढतजगवल्लभश्रीखंड॥अनलदाहिपीटतघनहिपरसुवदनयहदंड॥५९॥चौ॥विषयअलंपटसीलगुणाकर॥परदु
खदुखसुखसुखदेषेपर॥समअभूतरिपुविमदविरागी॥लोभामरषहरषभयत्यागी॥कोमलचितदीनन्हपरदाया॥मनवचक्रममममभक्ति
अमाया॥सवहिमानप्रदआपुअमानी॥भरतप्राणसममममतेप्रानी॥विगतकाममममनामपरायन॥शांतीबिरतिविनयमुदितायन॥सीतलतास
रलतामैत्री॥द्विजपदप्रीतिधर्मजयपत्री॥येसवलछनवसहिजासुउर॥जानहुतातसंतसंततफुर॥समदमनियमनीतिनहिडोलहि॥पुरुषवच
नकाहूनहिवोलहि॥दो॥निंदाअस्तुतिउभयसममममताममपदकंज॥तेसज्जनममप्राणसमगुणमंदिरसुखपुंज॥६०॥चौ॥सुनहुअसंतन
केरसुभाऊ॥भुलिहुसंगतिकरियनकाऊ॥तिन्हकरसंगसदादुखदाई॥जिमिकपिलहिघालैहरहाई॥खलन्हहृदेयअतितापविशेषी॥जरहि

उत्तर०
११

सदापरसंपतिदेषी॥ जहंकहुंनिंदासुनहिपराई॥ हरषहिमनहुंपरीनिधिपाई॥ कामक्रोधमदलोभपरायन॥ निर्दयकपटीकुटिलमलायन॥ वयरुअ
कारण सवकाहूसो॥ जोकरहितअनहिततांहूसो॥ झूठइलेनाझूठइदेना॥ झूठइभोजनझूठचवेना॥ बोलहिमधुरवचनजिमिमोरा॥ षाहिमहाअहिहृ
दयकठोरा॥ दो॥ परद्रोहीपरदाररतपरधनपरअपवाद॥ तेनरपावरपापमयदेहधरेमनुजाद॥ ३९॥ चौ॥ लोभैवोडनलोभैडासन॥ शीश्नोदरपरयमपुर
त्रासन॥ काहूकीजौसुनैवडाई॥ स्वासलेहिजनुजूडीआई॥ जवकाहूकीदेषहिविपती॥ सुखीभएमानहुजगनृपती॥ स्वारथरतपरिवारविरोधी॥ लं
पटकामलोभअतिक्रोधी॥ मातुपितागुरविप्रनमानही॥ आपुगएअरुघालहिआनहि॥ करहिमोहवसद्रोहपरावा॥ संतसंगहरिकथानभावा॥ अवगुण
सिंधमंदमतिकामी॥ वेदविदूखकपरधनस्वामी॥ विप्रद्रोहपरद्रोहविशेषा॥ दंभकपटजियधरेसुवेषा॥ दो॥ ऐसेअधममनुजखलकृतजुगत्रेतान
हि॥ द्वापरकछुककछुवृंदवहु होइहैकलिजुगमाहि॥ ४०॥ चौ॥ परहितसरिषधर्मनहिभाई॥ परपीडासमनहिअधमाई॥ निर्णयसकलपुरानवेदकर
कह्यौतातजानहिकोविदनर॥ नरसरीरधरिजेपरपीरा॥ करहिसुसहहिमहाभवभीरा॥ करहिमोहवसपरअपमाना॥ स्वारथरतपरलोकनन(
साना॥ कालरूपतिन्हकहमैभ्राता॥ सुभअरुअसुभकर्मफलदाता॥ असविचारजेपरमसयाने॥ भजहिमोहिसुरनरमुनिनायक॥ संतअ राम
संतनकेगुणभाषे॥ तेनपरहिभवजेलषिराषे॥ दो॥ सुनहुतातमायाजनितगुणअरुदोषअनेक॥ गुणयहउपभयनदेषियहिदेषियसोअवि ११
वेक॥ ४१॥ चौ॥ श्रीमुखवचनसुनतसवभाई॥ हरषेप्रेमनहृदयसमाई॥ करहिविनयअतिवारहिंवारा॥ हनूमानउरहरषअपारा॥ पुनिरघुप

तिनिजमंदिरगए॥इहिविधिचरितकरतनितनए॥वारवारनारदमुनिआवहि॥चरितपुनीतरामकेगावहि॥नितनवचरितदेषिमुनिजांही
ब्रह्मलोकसवकथाकहांहीं॥सुनिविरिंचिअतिसयसुखमानहि॥पुनिपुनितातकरहुगुणगानही॥सुनिगुणगानसमाधिविसारी॥सादर
सुनहिपरमअधिकारी॥दो॥जीवनमुक्तिब्रह्मपरचरितसुनहितजिध्यान॥जेहरिकथानरतिकरहितिन्हकेहियपाषान॥६४॥चौ॥एकवारर
घुनाथवुलाए॥गुरद्विजपुरवासीसवआए॥वैठेगुरमुनिअरुद्विजसज्जन॥वोलेवचनभक्तभयभंजन॥सुनहुसकलपुरजनममवानी॥क
हौनकछुममताउरआनी॥नहिअनीतिनहिकछुप्रभुताई॥सुनहुकरहुजोतुमहिसोहाई॥सोसेवकप्रीतमममसोई॥ममअनुशासनमा
नैजोई॥जोअनीतिकछुभाषौंभाई॥तौमुहिवरजहुभयविसराई॥वडेभागमानुषतनपावा॥सुरदुर्ल्लभसवग्रंथनगावा॥साधनधर्ममोक्षक
रद्वारा॥पाइनजिन्हपरलोकसवारा॥दो॥सोपरत्रदुखपावईसिरधुनिधुनिपछिताइ॥कालहिकर्म्महिईश्वरहिमिथ्यादोषलगाइ॥६५॥चौ॥य
हतनकरफलविषयनभाई॥स्वर्गौस्वल्पअंतदुखदाई॥नरतनुपाइविषयमनुदेही॥पलटिसुधातेसठविषलेही॥ताहिकवहुंभलकहैनको
ई॥गुंजागहहिपरसमणिषोई॥आकरचारिलक्षचौरासी॥जोनिभ्रमतयहजियअविनासी॥फिरतसदामायाकरप्रेरा॥कालकर्मसुभा
वगुणघेरा॥कवहुंककरिकरुणानरदेही॥देतइसविनुहेतुसनेही॥नरतनुभववारिधकहुंवेरा॥सनमुखमरुतअनुग्रहमेरा॥करनधार
सदगुरुदृढनावा॥दुर्ल्लभसाजसुलभकरिपावा॥दो॥जोनतरैभवसागरहिनरसमाजअसपाई॥सोकृतिनिंदकमंदमतिआतमहनगत

उत्तर० तिपाई॥६६॥चौ॥जौपरलोकइहासुखचहहू॥सुनिममवचनहृदयदृढगहहू॥सुलभसुखदमारगयहभाई॥भक्तिमोरिपुरानश्रुतिगा
१२ ई॥ज्ञानअगमप्रत्यूहअनेका॥साधनकठिननमनकहुटेका॥करतकष्टवहुपावैकोऊ॥भक्तिहीनमुहिप्रियनहिसोऊ॥भक्तिसुतंत्रस
कलगुणषानी॥विनुसतसंगनपावहिप्रानी॥पुन्यपुंजविनुमिलहिनसंता॥सतसंगतिसंसृतिकरअंता॥पुन्यएकजगमहुंनहिदूजा॥मनक्र
मवचनविप्रपदपूजा॥सानकूलतिहिपरमुनिदेवा॥जोतजिकपटकरैद्विजसेवा॥दो॥औरौएकगुप्तमतसवहिकरौकरजोरि॥संकरभजनविना
नराभक्तिनपावैहिमोरि॥६७॥चौ॥कहहुभक्तिपथकवनप्रयासा॥योगनमखजपतपउपवासा॥सरलसुभावनमनकुटिलाई॥य
थालाभसंतोषसदाई॥मोरदासकहाइनरआसा॥करैतकहहुकहांविस्वासा॥वहुतकहोकाकथावढाई॥इहिआचरणवश्यमैभाई
वैरनविग्रहआसनत्रासा॥सुखमयताहिसदासवआसा॥अनारंभअनिकेतअमानी॥अनघअरोषदक्षविज्ञानी॥प्रीतिसदास
ज्जनसंसर्गा॥तृणसमविषयस्वर्गअपवर्गा॥भक्तिपक्षहठनहिसठताई॥दुष्टतर्कसवदूरिविहाई॥दो॥ममगुणग्रामनामरतिगतम राम
मतामदमोह॥ताकरसुखसोजानईपरमानंदसंदोह॥६८॥चौ॥सुनतसुधासमवचनरामके॥गहेसवन्हिपदकृपाधामके॥जननिज १२
नकगुरवंधहमारे॥कृपानिधानप्राणतेप्यारे॥तनुधनुधामरामहितकारी॥सवविधितुमप्रणतारतिहारी॥असिसिषतुमविनुदेईन
कोऊ॥मातुपितास्वारथरतओऊ॥हेतुरहितजगजुगउपकारी॥तुमतुमारसेवकअसुरारी॥स्वारथमीतसकलजगमाही॥सपने

कुपरमारथ नाही ॥ सब के वचन प्रेमरस साने ॥ सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने ॥ निज निज गृह गे आयसु पाई ॥ वरणत प्रभु वतकही सुहाई ॥ दो
उमा अवधिवासी नर नारि कृतारथ रूप ॥ ब्रह्म सच्चिदानंदघन रघुनायक जहं भूप ॥ ९९ ॥ चौ ॥ एक वार वसिष्ट मुनि आए ॥ जहां राम सु
खधाम सुहाए ॥ अति आदर रघुनायक कीन्हा ॥ पद पखालि पादोदक लीन्हा ॥ राम सुनहु मुनि कह कर जोरी ॥ कृपासिंधु विनती कछु
मोरी ॥ देखि देखि आचरण तुम्हारा ॥ होत मोह मम हृदय अपारा ॥ महिमा अमित वेद नहि जाना ॥ मै किहि भांति कहौ भगवाना ॥ उपरोहिती क
मे अति मंदा ॥ वेद पुरान सुमृति के निंदा ॥ जौ न लेउ मै तव विधि मोही ॥ कहिं उं लाभ आगे सुत तोही ॥ परमातमा ब्रह्म नर रूपा ॥ होइहि रघु
कुल भूषण भूपा ॥ दो ॥ तव मै हृदय विचारिउं जोग जज्ञ व्रत दान ॥ जाकहुं करिय सु पाइहौं धर्म न इहि सम आन ॥ १० ॥ चौ ॥ जप तप नियम
जोग निज धर्मा ॥ श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥ ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन ॥ जहं लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥ आगम निगम पुरान अ
नेका ॥ पढे गुने कर फल प्रभु एका ॥ तव पद पंकज प्रीति निरंतर ॥ सव साधन कर यह फल सुंदर ॥ छूटै मल कि मलहि के धोए ॥ घृत कि पा
वकोइ वारि विलोए ॥ प्रेम भक्ति जल विनु रघुराई ॥ अभिअंतर मल कबहुं न जाई ॥ सो सरबज्ञ तज्ञ सो पंडित ॥ सो गुण गृह विज्ञान अख
ण्डित ॥ दक्ष सकल लक्षण जुत सोई ॥ जाके पद सरोज रत होइ ॥ दो ॥ नाथ एक वर मागउं राम कृपा करि देहु ॥ जन्म जन्म प्रभु पद क
मल कबहुं घटै जनि नेहु ॥ ११ ॥ चौ ॥ अस कहि मुनि वसिष्ट गृह आए ॥ कृपासिंधु के मन अति भाए ॥ हनूमान भरतादिक भ्राता

उत्तर॰ संगलिए सेवक सुखदाता॥ पुनि कृपाल पुर बाहिर गए॥ गज रथ तुरग मगावत भए॥ देषि कृपा करि सकल सराहे॥ दिये उचित जिन्ह जिन्ह
१३ जे चाहे॥ हरए सकल श्रम प्रभु श्रम पाई॥ गए जहा सीतल अवराई॥ भरत दीन्ह निज वसन डसाई॥ वैठे प्रभु सेवहि सव भाई॥ मारुतसुत तव
मारुत करई॥ पुलक वपुष लोचन जल भरई॥ हनूमान सम नहि वडभागी॥ नहि कोउ रामचरन अनुरागी॥ गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई
वार वार प्रभु निज मुख गाई॥ दो॥ तेहि अवसर रिषि नारद आए करतल वीन॥ गावन लागे राम कल कीरत सदा नवीन॥७२॥ चौ॥ मामवि
लोकय पंकज लोचन॥ कृपा विलोकनि सोच विमोचन॥ नील तामरस स्याम काम अरी॥ हृदय कंज मकरंद मधुप हरी॥ जातुधान वरूथ
वल भंजन॥ मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन॥ भूसुर ससि नव वृंद वलाहक॥ असरन सरन दीन जन गाहक॥ भुज वल विपुल भार महि
षंडित॥ खर दूषण विराध वल मंडित॥ रावनारि सुखरूप भूपवर॥ जै दशरथ कुल कुमुद दिवाकर॥ सुजस पुरान विदित निगमागम॥ गावत
सुर मुनि संत समागम॥ कारुनीक वालीमद खंडन॥ सव विधि कुशल कोशला मंडन॥ कलिमल मथन नाम ममता हन॥ तुलसीदास प्रभु राम
पाहि प्रनत जन॥ दो॥ प्रेम सहित मुनि नारद वरनि राम गुणग्राम॥ सोभासिंधु हृदय धरि गए जहा विधि धाम॥७३॥ चौ॥ आए उ ब्रह्मदेव मुनि १३
संगा॥ निरषे रघुकुल कमल पतंगा॥ जोरि पानि विधि अस्तुति कीन्हा॥ प्रेम सहित प्रभु आसन दीन्हा॥ उठे भरत विधि चरन पषारे॥ रामचं
द्र मृदु वचन उचारे॥ केहि कारन आगमन तुम्हारा॥ कहिय वेगि नहि लाइय वारा॥ कहत विधाता दुइ कर जोरी॥ सुनहु राम कछु वीनती

मोरी ॥ ममहित लागि प्रभु नरतनु धारी ॥ मारे असुर भूमि भय टारी ॥ रावन कुंभकरन तुम मारा ॥ प्रभु तुम सकल देव निस्तारा ॥ भए सकल प्रभु पूरन
कामा ॥ विनै करो चलि हौं निज धामा ॥ पुनि जस आग्या मोकह होई ॥ माथे मानि करों प्रभु सोई ॥ सुनि विधि गिरा वहुरि प्रभु भाषे ॥ जो तुम कहा सो हम
गुनि राषे ॥ दो ॥ एतना कहि विधि वंदि पद अस्तुति करि वहु वार ॥ सकल देव मुनि संग ले गए उ ब्रह्म आगार ॥ ७४ ॥ चौ ॥ गिरिजा सुनहु वि-
सद यह कथा ॥ सो सव कहेउं मोरि मति यथा ॥ रामचरित शत कोटि अपारा ॥ श्रुति सारद नहि वरनै पारा ॥ राम अनंत अनंत गुनानी ॥ जन्म
कर्म अनंत मैं मानी ॥ जल सीकर महि रज गनि जाई ॥ रघुपति चरित न वरनि सिराई ॥ विमल कथा हरिपद दायनी ॥ भक्ति होइ सुनि अ-
नपायनी ॥ उमा कहेउं सो कथा सोहाई ॥ जो भुसुंडि षगपतिहि सुनाई ॥ कछुक रामगुन कह्यो वषानी ॥ वोलि अति मृदु वचन भवानी
सुनि सव कथा उमा हरषानी ॥ अव पुनि कहो सो कहउ वषानी ॥ धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ॥ सुनेउ रामगुण भौ भैहारी ॥ दो ॥ तुमरी कृपा कृपाय-
तन अकृत कृत्य न मोह ॥ जानेउं राम प्रताप प्रभु कृपानंद संदोह ॥ ७५ ॥ चौ ॥ दो ॥ नाथ तवानन ससि श्रवत कथा सुधा रघुवीर ॥ श्रवन पुट मन पा-
न करि नहि अघात मति धीर ॥ ७६ ॥ चौ ॥ रामचरित जे सुनत अघाही ॥ रस विशेष जाना तिन्ह नाही ॥ जीवन मुकति महा मुनि जेऊ ॥ हरिगुण सुन-
त निरंतर तेउ ॥ भवसागर चह पार जे पावा ॥ रामकथा तिन्ह कहं दृढ नावा ॥ विषइन्ह कह पुनि हरिगुनग्रामा ॥ श्रवन सुनत अरु मन अभिरामा ॥ श्रवन-
वंत अस को जग माही ॥ जाहि न रघुपति कथा सुहाही ॥ जे जउ जीवन आतमघाती ॥ तिनहि न रघुपति कथा सोहाती ॥ हरिचरित्र मानस तुम गावा ॥

उत्तर सुनि मैं नाथ परम सुख पावा॥ तुम जो कहा यह कथा सुहाई॥ काग भसुंडि गरुड प्रति गाई॥ दो॥ विरति ज्ञान विज्ञान दृढ राम चरन अति नेह॥
१४ वायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह॥ ७७॥ चौ॥ नर सहस्त्र महँ सुनहु पुरारी॥ कोउ एक होइ धर्म व्रतधारी॥ धर्मशील कोटिन्ह महँ कोइ
विषै विमुख विराग रत होइ॥ कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई॥ सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई॥ ज्ञानवंत कोटिन्ह महँ कोई॥ जीवन मुक्ति सुकृत
जग सोई॥ तिन्ह सहस्त्र महँ सब सुख खानी॥ दुर्ल्लभ ब्रह्म जीव विज्ञानी॥ धर्म सुसील एक रस ज्ञानी॥ जीवनि मुक्ति ब्रह्म परधानी॥ सब तें सो दुर्ल्लभ सुर
राया॥ राम भक्ति रति गत मद माया॥ सो हरि भक्ति काग किमि पाई॥ विश्वनाथ मोहि कहो बुझाई॥ दो॥ राम परायन ज्ञान रत गुणागार मति धीर॥ ना
थ कहहु केहि कारन पाएउ काग सरीर॥ ७८॥ चौ॥ इह प्रभु चरित पवित्र सोहाए॥ कहहु कृपाल काग किमि पाए॥ तुम केहि भांति सुना मदनारी॥
कहहु मोहि अति कौतुक भारी॥ गरुड महाज्ञानी सुखरासी॥ हरिसेवक अति निकट निवासी॥ तेहिं केहि हेतु काग सन जाई॥ सुनी कथा मुनि नि
कर विहाई॥ कहहु कवनि विधि भा संवादा॥ दोउ हरिभक्त काग उरगादा॥ गौरि गिरा सुनि सरल सोहाई॥ बोले शिव सादर सुख दाई॥ धन्य सती पावन राम
मति तोरी॥ रघुपति चरित प्रीति नहि थोरी॥ सुनहु परम पुनीत इतिहासा॥ जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा॥ उपजै राम चरन विश्वासा॥ भव निधि त १४
रन रवि नहि प्रयासा॥ दो॥ ऐसिय प्रस्न विहंगपति कीन्हि काग सन जाइ॥ सो सब सादर कहब मैं सुनहु उमा मन लाई॥ दो॥ ७९॥ चौ॥ मैं जिमि कथा
सुना भव मोचनि॥ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि॥ प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा॥ सती नाम तब रहा तुम्हारा॥ दक्ष यज्ञ तव भा अपमाना॥ तुम अति क्रो

घतजातवपुनाना॥ ममअनुचरन्हकीन्हमखभंगा॥ जानहुसोतुमसकलप्रसंगा॥ तवअतिसोचभएउमनमोरे॥ दुखितभएउवियोगप्रियतोरे॥ सुं
दरवनगिरिसरिततडागा॥ कौतुकदेषतफिरौविरागा॥ गिरिसुमेरउत्तरदिसिदूरी॥ नीलसैलसुंदरएकभूरी॥ तासुकनकमनिसिषरसोहाए॥ चा
रुचारिमोरेमनभाए॥ तिहिपरइकइकविटपविसाला॥ विटपीपरपाकरीरसाला॥ सैलउपरसरसुंदरसोहा॥ मनिसोपानदेषिमनमोहा॥ दो॥ सीतल
अमलमधुरजलजलजविपुलवहुरंग॥ कूजतकलरवहंसगणगुंजतमंजुलभृंग॥८०॥ चौ॥ तेहिगिरिरुचिरवसैषगसोई॥ तासुनासकल्प
पंतनहोइ॥ मायाकृतगुणदोषअनेका॥ मोहमनोजआदिअविवेका॥ रहावसिहरिहिभजैसोकागा॥ सोसुनुउमासहितअनुरागा॥ पीपरत
रुतरध्यानसोधरइ॥ जज्ञजापपाकरितरकरई॥ आंवछांहकरमानसएजा॥ तजिहरिभजनकाजनहिदूजा॥ वटतरकहहरिकथाप्रसंगा॥ आ
वहिसुनहिविहंगा॥ रामचरितविचित्रविधिनाना॥ प्रेमसहितकरसादरगाना॥ सुनहिसकलमतिविमलमराला॥ वसहिनिरंतरसोतेहिकाला॥
जवमैजाइसुकौतुकदेषा॥ उरउपजाआनंदविसेषा॥ दो॥ तवकछुकालमरालतनुधरितहंकीन्हनिवास॥ सादरसुनिरघुपतिचरितपु
निआएकैलास॥८१॥ चौ॥ गिरिजाकहेउसोसवइतिहासा॥ मैजेहिसमयगएउषगपासा॥ अवसोकथासुनहुजेहिहेतू॥ गएका
गपहषगकुलकेतू॥ जवरघुनाथकीन्हरनक्रीडा॥ समुझतचरितहोतिमोहिव्रीडा॥ इंद्रजीतकरिआपुवधावा॥ तवनारदमुनिग
रुडपठावा॥ वंधनकाटिगएउरगादा॥ उपजाहृदयप्रचंडविषादा॥ प्रभुवंधनसमुझतवहुभाती॥ करतविचारउरगआराती॥ व्याप

उत्तर० कब्रह्मविरजवागीसा॥ मायामोहपारपरमीसा॥ सोअवतारसुनेउजगमाही॥ देषेउसोप्रभावकछुनाही॥ दो॥ भवबंधनतेछूटहिनर
१५ जपिजाकरनाम॥ अधमनिसाचरबाधेउनागफाससोराम॥ ८२॥ चौ॥ नानाभांतिमनहिसमुझावा॥ प्रगटनज्ञानहृदयभ्रमछावा॥ षे
दषिन्नमनतरकवढाई॥ भयेमोहवसतुमरीनाई॥ व्याकुलगएउदेवरिषिपाही॥ कहेसिजोसंसयनिजमनमाही॥ सुनिनारदहिला
गिअतिदाया॥ सुनुषगप्रवलरामकैमाया॥ जोज्ञानिन्हकरचितअपहरई॥ वरिआंइविमोहवसिकरई॥ जोवहुवारनचावामोही॥ सोव्यापी
विहंगपतितोही॥ महामोहउपजामनतोरे॥ मिटिहिनवेगिकहेषगमोरे॥ चतुराननपहिजाहुषगेसा॥ सोइकरेहुजेहिआइअदेसा॥
दो॥ असकहिचलेउदेवरिषिकरतरामगुनगान॥ हरिमायावलवरननतपुनिपुनिपरमसुजान॥ ८३॥ चौ॥ तवषगपतिविरंचिपहि
गएउ॥ निजसंदेहसुनावतभएउ॥ सुनिविरंचिरामहिसिरुनावा॥ समुझिप्रतापप्रेमउरछावा॥ मनमहकरैविचारविधाता॥ मायावसि
कविकोविदज्ञाता॥ हरिमायाकरअमितप्रभावा॥ विपुलवारजेहिमोहिनचावा॥ यहभवअगजगमेमउपराया॥ नहिआचर्जमोहिषगरा राम
या॥ तववोलेविधिगिरासोहाई॥ जानमहेसरामप्रभुताई॥ वैनतेयसंकरपहजाहू॥ तातअनतपूछहुजनकाहू॥ तहहोइहितवसंसय १५
हानी॥ चलेउविहंगसुनतविधिवानी॥ दो॥ परमातुरेविहंगपतितवआएमोहिपास॥ जातरहेउकुवेरगृहरहीउउमाकैलास॥ ८४॥
चौ॥ तेइममपदसादरसिरुनावा॥ पुनिआपनसंदेहसुनावा॥ सुनिताकरिविनीतमृदुवानी॥ प्रेमसहितमैकहाभवानी॥ मिलेहुगरुड

मारग महि मोही॥ कवनि भांति समुझावउं तोही॥ तब होइहि तव संसय भंगा॥ जब बहु काल करिय सतसंगा॥ सुनिय तहां हरि कथा सोहाई॥ नाना
भांति मुनीसन्ह गाई॥ जेहि मं आदि मध्य अवसाना॥ प्रभु प्रतछ राम भगवाना॥ निति हरि कथा होति तहं भाई॥ पठवउं तहां सुनो षगराई॥ जाइहि सु
नत सकल संदेहा॥ राम चरन होइहि अति नेहा॥ दो॥ बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग॥ मोह गए बिनु राम पद होइ न दृढ अनुराग॥ ६१॥
चौ॥ मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा॥ किये जोग जप ज्ञान विरागा॥ उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला॥ तहां रह कागभसुंडि सुसीला॥ राम भक्ति पथ प
रम प्रवीना॥ ज्ञानी गुन गन परम कुलीना॥ राम कथा सोइ कहै निरंतर॥ सादर सुनहि विहंग विविधि वर॥ जाइ सुनहु तहं हरि गुन भूरी॥ होइ
हि मोह जनित दुख दूरी॥ मैं जब सब तेहि कहेउ बुझाई॥ चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई॥ ताते उमा न मैं समुझावा॥ रघुपति कृपा मर्म मैं पावा॥ होइहि
कीन्ह कबहु अभिमाना॥ सो षोवा चह कृपानिधाना॥ कछु तेहि ते पुनि मैं नहि राषा॥ समुझै षग षगहि की भाषा॥ प्रभु माया बलवंत भवानी॥ जा
हि न मोह कवन अस ग्यानी॥ दो॥ ज्ञान भक्ति सिरोमनि त्रिभुवन पति कर जान॥ ताहि मोह माया प्रबल पावर करहि गुमान॥ ६२॥ दो॥ शिव बि
रंचि कह मोहइ को है बपुरा आन॥ अस जिय जानि भजहि मुनि माया पति भगवान॥ ६३॥ चौ॥ गए गरुड जहं बसहि भसुंडी॥ मति अकुंठ हरि
भक्ति अषंडी॥ देषि सैल प्रसन्न मन भएऊ॥ माया मोह सोच सब गएऊ॥ करि तडाग मज्जन जलपाना॥ बट तर गएउ हृदय हरषाना॥ बृद्ध बृद्ध
विहंग तहं आए॥ सुनहि राम के चरित सोहाए॥ कथा अरंभ करै सो चाहा॥ ताहि समय गएउ षगनाहा॥ आवत देषि सकल षगराजा॥ हरषेउ बायस

सहित समाजा॥ अति आदर खगपति कर कीन्हा॥ स्वागत पूछि सु आसन दीन्हा॥ करि पूजा समेत अनुरागा॥ मधुर वचन बोले तव कागा॥ दो॥
नाथ कृतारथ भएउँ मैं तव दरसन खगराज॥ आयसु होइ सु करौं अव प्रभु आए केहि काज॥८८॥ दो॥ सदा कृतारथ रूप तुम कह मृदु वचन खगे
स॥ जा की अस्तुति सादर निज मुख कीन्ह महेस॥८९॥ चौ॥ सुनहु नाथ जेहि कारन आएउँ॥ सो सव गएउ दरस तुव पाएउ॥ देखि परम पावन
तव आस्रम॥ गएउ मोह संसै नाना भ्रम॥ अव श्री रामकथा अति पावन॥ सदा सुखद दुखपुंज नसावन॥ सादर तात सुनावहु मोही॥ वार वार विन
वौं प्रभु तोही॥ सुनत गरुड कै गिरा विनीता॥ सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता॥ भएउ तासु मन परम उछाहा॥ लाग कहै रघुपति गुण गाहा॥ प्रथ
महि अति अनुराग भवानी॥ रामचरित सव कहेसि वषानी॥ पुनि नारद कर मोह अपारा॥ कहेसि वहुरि रावन अवतारा॥ प्रभु अवतार कथा पु
नि गाई॥ तव सिसु चरित कहेसि मन लाइ॥ दो॥ वाल चरित कहि विविध विधि मन महं परम उछाह॥ रिषि आगमन कहेसि पुनि श्री रघुवीर वि
वाह॥ चौ॥ ९०॥ वहुरि राम अभिषेक प्रसंगा॥ पुनि नृप वचन राज रस भंगा॥ पुरवासिन कर विरह विषादा॥ कहेसि राम लछिमन संवा
दा॥ विपिन गवन केवट अनुरागा॥ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा॥ वालमीक प्रभु मिलन वषाना॥ चित्रकूट जिमि वसि भगवाना॥ स
चिवागमन नगर नृप मरना॥ भरतागवन प्रेम कछु वरना॥ करि नृप क्रिया संग पुरवासी॥ भरत गए जहं प्रभु सुखरासी॥ पुनि रघुपति व
हु विधि समुझाए॥ लै पादुका अवधपुर आए॥ भरत रहनि सुरपति सुत करनी॥ प्रभु अरु अत्रि भेट पुनि वरनी॥ दो॥ कहि विराध वध जव

निविधिदेहतजीसरभंग॥ वरनिसुतीछनप्रीतिपुनिप्रभुअगस्तिसतसंग॥ ९१॥ चौ॥ कहिदंडकवनपावनपावनताई॥ गीद्धमयेत्रीपु
नितिहिगाई॥ पुनिप्रभुपंचवटीकृतवासा॥ भंजेसकलमुनिन्हकीत्रासा॥ पुनिलछिमनउपदेसअनूपा॥ सूर्पनखाजिमिकीन्हकु
रूपा॥ खरदूषणवधवहुरिवषाना॥ जिमिसवमरमदसाननजाना॥ दसकंधरमारीचवतकही॥ जिहिविधिभैसोसवतिहिकही॥
पुनिमायासीताकरहरना॥ श्रीरघुवीराविरहकछुवरना॥ पुनिप्रभुगीधकृपाजिमिकीन्हा॥ वधिकवंधशिवरिहिगतिदीन्हा॥ वहु
रिविरहवरननतरघुवीरा॥ जेहिविधिगएसरोवरतीरा॥ दो॥ प्रभुनारदसंवादकहिमारुतिमिलनप्रसंगा॥ पुनिसुग्रीवमिताइवालिप्रानकरभंग॥ दो
कपिहितिलककरिप्रभुकीनसैलप्रवर्षणवास॥ वरननतवरषासरदरितुरामरोषकपित्रास॥ ९२॥ चौ॥ जेहिविधिकपिपतिकीसपटाए॥ सीता
षोजसकलदिसिधाए॥ विवरप्रवेशकीन्हजेहिभांती॥ कपिनिवहोरिमिलासंपाती॥ सुनिसवकथासमीरकुमारा॥ नाघतभएउपयो
धिअपारा॥ लंकाकपिप्रवेशजेहिकीन्हा॥ पुनिसीताकहधीरजदीन्हा॥ वनउजारिरावनहिप्रवोधी॥ पुरदहनाघेउवहुरिपयोधी
आएकपिसवजहरघुराई॥ वैदेहीकीकुशलसुनाई॥ सैनसमेतयथारघुवीरा॥ उतरेजाइसिंधकेतीरा॥ मिलाविभीषनजेहिविधिआ
ई॥ सागरविग्रहकथासुनाई॥ दो॥ सेतवाधिकपिसैनजिमिउतरेसागरपार॥ गएउवसीठीवीरवरजेहिविधिवालिकुमार॥ दो॥ निसिचरकी
सलराइवरनेउविविधिप्रकार॥ कुंभकरनघननादकेवलपौरुषसंघार॥ ९५॥ चौ॥ निसिचरनिकरमरनविधिनाना॥ रघुपतिरावनसमरवषा

उत्तर० ना॥ रावनवधमदोदरीसोका॥ राजविभीषण दीन्हविशोका॥ सीतारघुपतिमिलनवहोरी॥ सुरन्हकीन्ह अस्तुतिकरजोरी॥ पुनिपुष्पकच(
१७ ढिकपिनसमेता॥ अवधिचलेप्रभुकृपानिकेता॥ जेहिविधिरामनगरनिजआए॥ वायसविसदचरितसवगाए॥ कहेउवहोरिरामअभि
षेका॥ पुरवरननतन्रपनीतिविवेका॥ कथासमस्तभसुंडिवषानी॥ जोमैतुमसनकहिउंभवानी॥ सुनिसवरामकथाखगनाहा॥ कहत
वचनमनपरमउछाहा॥ सो॥ गएउमोरसंदेहसुनतसकलरघुपतिचरित॥ भएउरामपदनेहतवप्रसादवायसतिलक॥ सो॥ मो(
हिभयोअतिमोहप्रभुवंधनरननमझुनिरषि॥ चिदानंदसंदोहरामविकलकारनकवन॥ ९७॥ चौ॥ देषिचरितअतिनरअनुहारी॥ भए
उहृदयममसंसयभारी॥ सोभ्रमअवहितकरिमैमाना॥ कीन्हअनुग्रहकृपानिधाना॥ जोअतिआतपव्याकुलहोई॥ तरुछायासुखजा
नैसोई॥ जोनहिहोतमोहअतिमोही॥ मिलतेउनातकवनिविधितोही॥ सुनितेउकिमिहरिकथासोहाई॥ अतिविचित्रवहुविधितुमगाई॥ नि
गमअगमपुराननमतएहा॥ कहहिसिद्धमुनिनहिसंदेहा॥ संतसुद्धमिलहिपैतेही॥ रामकृपाकरिचितवहिजेही॥ रामकृपातवदरसनभएउ॥ राम
तवप्रसादममसंसयगएउ॥ दो॥ सुनिविहंगपतिवानीसहितविनैअनुराग॥ पुलकिगातलोचनसजलमनहरषेअतिकाग॥ दो॥ श्रोतासुम १७
तिसुसीलसुचिकथारसिकहरिदास॥ पाइउमातेगोप्यमतसज्जनकरहिप्रकास॥ ९८॥ चौ॥ वोलेउकागभसुंडिवहोरी॥ नभगनाथपर(
प्रीतिनथोरी॥ सवविधिनाथपूज्यतुममेरे॥ कृपापात्ररघुनायककेरे॥ तुमैनसंसयमोहनमाया॥ मोपरनाथकीन्हतुमदाया॥ पठइमोहमि

सुषगपतितोही॥ रघुपतिदीन्हवडाइमोही॥ तुमनिजमोहकहाषगराई॥ सोनहिकछुआचर्जगोसाई॥ नारदभवविरंचिसनकादी॥ जो
मुनिनायकआतमवादी॥ मोहनकीन्हअंधकेहिकेही। कोजगकामनचावनजेही॥ त्रस्नैकेहिनकीन्हवौराहा॥ केहिकेहृदयक्रोध
नहिदाहा॥ दो॥ ज्ञानीतापससूरकवि कोविदगुणआगार॥ काहिनलोभविडंवना कीन्हनएहिसंसार॥१००॥ दो॥ श्रीमदवक्रनकीन्हिकि
हिप्रभुतावधिरनकाहि॥ मृगनयनीकेनयनसरकोअसलागनजाहि॥१०१॥ चौ॥ गुणकृतसन्न्यपातनहिकेही॥ केहिनमानमदतजत
निवेही॥ जोवनवलकेहिनहिवलकाया॥ ममताकेहिकरजसननसाया॥ मत्सरकाहिकलंकनलावा॥ काहिनसोकसमीरडोलावा॥ चिंता
सर्पिनिकाहिनषाया॥ कोजगजाहिनव्यापिमाया॥ कीटमनोरथदारुसरीरा॥ केहिनलागघुनकोअसधीरा॥ सुकविकलोकइषणातीनी॥ के
हिकरमतिन्हकृतनमलीनी॥ यहसवमायाकरपरिवारा॥ प्रवलअमितकोवरनैपारा॥ शिवविरंचिमुनिजाहिडेराही॥ अपरजीवकेहिलेषेमाही॥
दो॥ व्यापिरहेसंसारमहमायाकटकप्रचंड॥ सेनापतिकामादिभटदंभदेषपाषंड॥१०२॥ दो॥ सोदासीरघुवीरकीसमुझेमिथ्यासोपि॥ छूटन
रामकृपाविनानाथकहौपदरोपि॥१०३॥ चौ॥ सोमायासवजगहिनचावा॥ तासुचरितलषिकाहुनपावा॥ सोप्रभुभ्रूविलासखगरा
जा॥ नाचनटीइवसहितसमाजा॥ सोइसचिदानंदघनस्पामा॥ अजविज्ञानरूपगुणधामा॥ व्यापिकव्यापिअषंडअनंता॥ अखि
लअमोघशक्तिभगवंता॥ अगुनअदंभगिरागोतीता॥ समदरसीआनंदअजीता॥ निर्मलनिराकारनिर्मोहा॥ नीतिनिरंजनसुखसंदो

उत्तर॰ हा॥प्रक्रतिपारप्रभुसबउरवासी॥ब्रह्मनिरीहविरजअविनासी॥इहामोहकरकारननाही॥रविसनमुखतमकवहूकिजाही॥दो॥भगतिहे
१८ तुभगवानप्रभुरामधरेनररूप॥करितचरितपावनपरमप्राकृतनरअनुरूप॥दो॥यथाअनेकवेषधरिनृत्यकरैनटकोई॥सोइसोइभावदेषा
वइआपुनहोइनसोइ॥१०५॥चौ॥असरघुपतिलीलाउरगारी॥दनुजविमोहनसुखकारी॥येमतिमलिनविषैरसकामी॥प्रभुपरमोहध
रहिइमिस्वामी॥नैनदोषजाकहजवहोइ॥पीतवरनशशिकहकहसोइ॥जवजेहिदिशिभ्रमहोइषगेसा॥सोकहपछिमउदितदिनेसा॥नौकारूढ
चलतजगदेषा॥अचलमोहवसआपुहिपेषा॥वालकभ्रमहिनभ्रमहिग्रीहादी॥कहहिपरस्परमीथ्यावादी॥हरिविषइकअसमोह
विहंगा॥सपनेहुनहितिहिज्ञानप्रसंगा॥मायावसिमतिमंदअभागी॥हृदयजमनिकावहुविधिलागी॥तेसठहठवससंसयकरही॥निज
अग्यानरामपरधरही॥दो॥कामक्रोधमदलोभरतग्राहग्रसेदुखरूप॥तेकिमिजानहिरघुपतिहिमूढपरेभवकूप॥दो॥निर्गुणरूप
सुलभअतिसगुणनजानहिकोई॥सगुणअगुणनानाचरितसुनिसुनिभ्रममतिहोइ॥१०७॥चौ॥सुनुषगपतिरघुपतिप्रभुताई॥ राम
कह्योयथामतिकथासोहाई॥जेहिविधिमोहभयोप्रभुमोही॥सोसवकथासुनावोतोही॥रामकृपाभाजनतुमताता॥हरिगुणप्री १८
तिमोहिसुखदाता॥तातेनहिकछुतुमहिदुरावो॥परमरहस्यमनोहरगावो॥सुनहुरामकरसहजसुभाउ॥जनअभिमाननराष
हिकाउ॥संसृतिमूलसूलप्रदनाना॥सकलदोषदाहकअभिमाना॥तातेकरहिकृपानिधिदूरी॥सेवकपरममताअतिभूरी॥जि

मिसिसुतनव्रतहोइगोसाई॥मातुचीरावकठिनकिनाई॥दो॥जदपिप्रथमदुरवपावैरोवैवालअधीर॥व्याधिनासहितजननीगनैनसो
सिसुपीर॥दो॥तिमिरघुपतिनिजदासकरकरहिमानहितलागि॥तुलसीदासऐसेप्रभुहिकसनभजहिभ्रमत्यागि॥२०९॥चौ॥रा
मकृपाआपनिजडताई॥कहौखगेससुनऊमनलाई॥जवजवराममनुजतनधरही॥भक्तहेतुलीलावहुकराही॥तवतवअवधि
पुरीमैजाउ॥वालचरितविलोकिहरषाऊ॥जन्ममहोत्सवदेषौजाई॥वरषपांचतहेरहौलोभाई॥इष्टदेवममवालकरामा॥सोभावपुष
कोटिशतकामा॥निजप्रभुवदननिहारिनिहारी॥लोचनसुफलकरौउरगारी॥लघुवायसतनधरिहरिसंगा॥देषौवालचरितवहुरंगा॥दे
षिप्रभुहिउरसुरवअधिकाई॥एहिविधिअवधिरहौमैजाई॥दो॥लरकाइजहजहाफिरहि॥तहंतहंसंगउडाइ॥जूठनीपरइजुअजिरम
दो ऊसोउठाइकरिषाउ॥एकवारअतिसैसुभगचरितकिएरघुवीर॥सुमिरतसोइलीलाप्रभुपुलकितभयोसरीर॥२११॥चौ॥कहइभुसुंडि
सुनऊरवगनायक॥रामचरितसेवकसुरवदायक॥न्रपमंदिरसुंदरसवभाती॥षचितकनकमनिनानाजाती॥वरनिनजाइरुचिरअं
गनाई॥जहंषेलहिनितिचारौभाई॥वालविनोदकरहिरघुराई॥विचरतअजिरजननिसुरवदाई॥मरकतम्रदुलमनोहरस्यामा॥अंग
अंगप्रतिछविवहुकामा॥नवराजीवअरुणम्रदुचरना॥पदजरुचिरनषससिदुतिहरना॥ललितअंककुलिसादिकचारी॥न्रपुरचा
रुरुचिररवकारी॥चारुपुरटमनिरचितवनाई॥कटिकिंकिनिकलमुरवरसोई॥दो॥रेषात्रैसुंदरउदरनाभिरुचिरगंभीर॥उरआतिभ्रा

उत्तर० जितविविधिविधि वालविभीषएाचीर ॥७६॥ चौ॥ अरुनपानिनषरुचिरमनोहर ॥ भालविशालविभूषएासुंदर ॥ कंधवालकेहरिरदश्री
१९ वा ॥ चारुचिवुकआननछविसीवा ॥ कलवलवचनअधरअरुनारे ॥ दुइदुइदसनविसदवरवारे ॥ ललितकपोलमनोहरनासा ॥ सक
लसुखदससिकरसमहासा ॥ नीलकंजलोचनभवमोचन ॥ भ्राजतभालतिलकगोरोचन ॥ विकटभृकुटिसमश्रवनसोहाए ॥ कुं
चितकचमेचकछविछाए ॥ पीतझगुलिआतनअतिसोही ॥ किलकनिचितवनिभावतमोही ॥ रूपरासिन्टपअजिरविहारी ॥ नाचहि
नीजप्रतिविंवनिहारी ॥ मोसनकरहिविविधिविधिक्रीडा ॥ वरनतचरितहोहिमोहिव्रीडा ॥ किलकतमोहिधरनजववधावहि ॥ भाजिचलौत
वपूपदिवावहि ॥ दो ॥ आवतनिकटहसहिप्रभुजतरोदनकराहि ॥ जाउसमीपगहनपदफिरिफिरिचितइपराहि ॥ दो ॥ प्राकृतसिसुइ
वलीलादेषिभयोमोहिमोह ॥ कवनचरित्रकरतप्रभुचिदानंदसंदोह ॥७७॥ चौ॥ एतनामनआनतषगराया ॥ रघुपतिप्रेरितव्यापीमा
या ॥ सोमायानदुखदमोहिकाही ॥ आनजीवइवसंसतनाही ॥ नाथएककछुकारनआना ॥ सुनहुसोसवाधानहरिजाना ॥ ज्ञानअखं राम
डएकसीतावर ॥ मायावस्यजीवसचराचर ॥ जौसवकेरहज्ञानएकरस ॥ ईश्वरजीवहिभेदकहहुकस ॥ मायावस्यजीवअविनासी ॥ १९
यहसवस्वामीत्रैगुनरासी ॥ परवसजीवस्ववसभगवंता ॥ जीवअनेकएकश्रीकंता ॥ सुधाभेदयद्यपिकृतमाया ॥ विनुहरिजाहिन
कोटिउपाया ॥ दो ॥ रामचंद्रकेभजनविनुचाहैपदनिर्वान ॥ ज्ञानवंतअपिसोपिनरपसुविनुपूछविषान ॥ दो ॥ राकाससिषोडश

उअहि तारागण समुदाई॥ सकल गिरिन्ह दौ लाइ अरु रवि विनु राति न जाइ॥ दो॥ ७६॥ चौ॥ ऐसे विनु हरि भजन खगेसा॥ मिटइ न जीव
न केर कलेसा॥ हरिसेवकहि न व्याप अविद्या॥ प्रभुप्रेरित तेहि व्यापइ विद्या॥ ताते नास न होइ दास कर॥ भेदभक्ति वाढै विहंगवर॥ भ्रमते चकित
राम मोहि देषा॥ विहसे सो लषि चरित विशेषा॥ तेहि कौतुक कर मरम न काहू॥ जाना मरम न मातु पिताहू॥ जानु पानि धाए मोहि धरना॥ स्याम
लगात अरुण कर चरना॥ तव मै भाजि चले उ उरगारी॥ राम गहन कह भुजा पसारी॥ जिमि जिमि दूरी उडाइ अकासा॥ तहं हरिभुज देषौ निज पा
सा॥ दो॥ ब्रह्मलोक लगि गए उ मै चितए उ पाछ उडात॥ जुग अंगुल कर वीच सव राम भुजहि मोहि तात॥ दो॥ सपतावरन भेद करि जहलगि ग
ति रहि मोरि॥ गए उ तहा प्रभु भुज निरषि व्याकुल भए उ वहोरि॥ ७८॥ चौ॥ मूदे उ नैन त्रसित जव भए उँ॥ पुनि चितवत कोसलपुर गए उ॥ मोहि
विलोकि राम मुसुकाही॥ विहसत तुरत गए उ मुख माही॥ उदर माह सुनु अंडज राया॥ देषे उ वहु ब्रह्मांड निकाया॥ अति विचित्र तह लोक अ
नेका॥ रचना अधिक एक ते एका॥ कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा॥ अगिनित उडगन रवि रजनीसा॥ अगिनित उडगन रवि रजनीसा॥ अगिनि
ति लोकपाल जम काला॥ अगिनित भूधर भूमि विसाला॥ सागर सरि सर विपिन अपारा॥ नाना भाति स्रष्टि विस्तारा॥ सुर मुनि सिद्ध नाग न
र किन्नर॥ चारि प्रकार जीव सचराचर॥ दो॥ जो नहि देषा नहि सुना जो मनहू न समाई॥ सो सव अद्भुत देषे उँ वरनि कवनि विधि जाइ॥
दो॥ एक एक ब्रह्मांड मह रहे उ वरष शत एक॥ एहि विधि मै देषत फिरौ अंडकटाह अनेक॥ ८०॥ चौ॥ लोक लोक प्रति भिन्न विधाता॥ भिन्न वि

उत्तर० २० अजशिवमुनिदिसित्राता ॥ गनगंधर्वभूतवैताला ॥ किन्नरदानवखगएसुव्याला ॥ देवदनुजगननानाजाती ॥ सकलजीवतहआनहिभांती ॥ म
हिगिरिविपिनिलोकपतिनाना ॥ सवशपंचतहआनहिआना ॥ अंउकोशप्रतिप्रतिवकुरूपा ॥ देषेउजिनिसिअनेकअनूपा ॥ अवधिपुरीप्रतिभुवन
निनारी ॥ सरजूभिन्नभिन्ननरनारी ॥ दशरथकौशल्यासुनुताता ॥ विविधिरूपभरतादिकभ्राता ॥ प्रतिब्रह्मांडरामअवतारा ॥ देषेउवालविनोद
दो उदारा ॥ भिन्नभिन्नसबदेषेउ अतिविचित्रहरिजान ॥ अगिनितभुवनफिरेउमैरामनदेषेउआन ॥ दौ ॥ सोइसिसुपनसोइलीलासोइकृ
पालरघुवीर ॥ भुवनभुवनदेषतफिरौप्रेरितमोहसरीर ॥ ८१ ॥ चौ ॥ भ्रमतमोहिब्रह्मांडअनेका ॥ वीतेउमोहिकल्पशतएका ॥ फिरतफिरतनि
जआश्रमआएउ ॥ तहपुनिरहिकछुकालगवाएउ ॥ निजप्रभुजन्मअवधिसुनिपाएउ ॥ निर्भैप्रेमहरषिउठिधाएउ ॥ देषेउजन्ममहोत्स
वजाई ॥ जेहिविधिप्रथमकहामैगाई ॥ रामउदरदेषेउजगनाना ॥ देषतवनैनजाइवषाना ॥ तहपुनिदेषेउरामसुजाना ॥ मायापतिकृपा
लभगवाना ॥ करोविचारवहोरिवहोरी ॥ मोहसलिलव्यापितमतिमोरी ॥ उभैघरीमहमैसवदेषा ॥ भएउंश्रमितमनमोहविशेषा ॥ राम
दो ॥ देषिकृपालविकलमोहिविहसेतवरघुवीर ॥ विहसतहीसुखवाहिरेआएउसुनुमतिधीर ॥ दो ॥ सोइलरिकाइमोहिसनकरनलगेपु २०
निराम ॥ कोटिभांतिसमुझावोमनननलहैविश्राम ॥ ८२ ॥ चौ ॥ देषिचरितसोहरिप्रभुताई ॥ समुझतदेहदशाविसराई ॥ चरनपरेउमुखआव
नवाता ॥ त्राहित्राहिआरतजनत्राता ॥ प्रेमाकुलप्रभुमोहिविलोकी ॥ निजमायाप्रभुतातवरोकी ॥ करसरोजप्रभुममसिरधरेउ ॥ दीनदयाल

सकलदुखहरेउ॥ कीन्हराममोहिविगतविमोहा॥ सेवकसुखदकृपासंदोहा॥ प्रभुताप्रथमविचारिविचारी॥ मनमहहोउंहरषअतिभारी॥
भक्तवछलताप्रभुकिदेषी॥ उपजीउरममप्रीतिविशेषी॥ सजलनयनपुलकितकरजोरी॥ कीन्हेउंवहुविधिविनेवहोरी॥ दो॥ सुनिसप्रेम
ममवानीदेषिदीननिजदास॥ वचनसुखदगंभीरमृदुवोलेरमानिवास॥ दो॥ कागभसुंडिमागुवरअतिप्रसन्नमोहिजानि॥ अनेमादिकरि
धिसिधिअपरमुछसकलसुखखानि॥२६॥ चौ॥ ज्ञानविवेकविरतिविज्ञाना॥ मुनिदुर्लभभगतिजोजगनाना॥ आजुदेउसवसंसैनाही॥ मागु
जोतोहिभावमनमाही॥ सुनिप्रभुवचनअधिकअनुरागेउ॥ मनअनुमाननकरनतवलागेउ॥ प्रभुकहदेनसकलसुखसही॥ भक्तिआपनी
देननकही॥ भक्तिहीनसुखगुनसवकैसे॥ लोनविनावहुविंजनजैसे॥ भक्तिहीनसुखकवनेकाजा॥ असविचारिवोलेउखगराजा॥ जोप्र
भुहोइप्रसन्नवरदेहू॥ मोपरकरहुकृपाअतिनेहू॥ मनभावतवरमागौंस्वामी॥ तुम्हउदारप्रभुअंतरजामी॥ दो॥ अविरलिभक्तिविसुद्धतवश्रुति
पुरानजोगाव॥ जेहिषोजतजोगीसमुनिप्रभुप्रसादकोउपाव॥ दो॥ भक्तकल्पतरुप्रनतहितकृपासिंधसुखधाम॥ सोइनिजभक्तिदेहुप्रभु
मोहिकृपाकरिराम॥२८॥ चौ॥ एवमस्तुकहिरघुकुलनायक॥ वोलेवचनपरमसुखदायक॥ सुनुवायसतैंसहजसयाना॥ काहेनमागसिअ
सवरदाना॥ सवसुखखानिभक्तितैमागी॥ नहिकोइजगतोहिसमवडभागी॥ जोमुनिकोटिजतननहिलहही॥ जोजपजागअनलतनदहही॥ रि
झेउदेषितोरिचतुराई॥ मागेहुभक्तिमोहिअतिभाई॥ सुनुविहंगप्रसादअवमोरे॥ सवसुखसुलभवसिहिउरतोरे॥ भक्तिज्ञानविज्ञानविरागा॥ जो

गचरित्र रहस्यविभागा॥ जानवतै सव हीकर भेदा॥ ममप्रसाद नहि साधन षेदा॥ दो॥ मायासंभव भर्मसव सो नहि व्यापिहि तोहि॥ जानेसु
व्रह्म अनादि अजअगुनगुणाकर मोहि॥ दो॥ मोहि भक्ति एय संत ति अस विचार सुनु काग॥ काय वचन मन मम पद करेहु अचल अनु
राग॥ ८०॥ चौ॥ अव सुनु परम विमल मम वानी॥ सत्य सुगम निगमादि वषानी॥ निज सिद्धांत सुनावो तोही॥ सुनि मन धरु सव तजि
भजु मोही॥ मम माया संभव संसारा॥ जीव चराचर विविध प्रकारा॥ सव मम एय सव मम उपजाए॥ सव ते अधिक मनुज मोहि भाए॥ ति
न्ह मह द्विज द्विज मह श्रुतिधारी॥ तिन्ह मह निगम धर्म अनुसारी॥ तिन्ह मह एय विरक्त मुनि ज्ञानी॥ ज्ञानी ते अति एय विज्ञानी॥ तिन्ह
ते एय मोहि पुनि निज दासा॥ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा॥ पुनि पुनि सत्य कहो तोहि पाही॥ मोहि सेवक सम एय कोउ नाही॥ भक्तिहीन वि
रंचि किन होइ॥ सव जीवन सम एय मोहि सोइ॥ भक्तिवंत अति नीचौ प्रानी॥ मोहि प्रान एय मम अस वानी॥ दो॥ सुचि सुसील सेवक सुमति
एय कहु काहि न लागा॥ श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग॥ ८१॥ चौ॥ एक पिता के विपुल कुमारा॥ प्रथक प्रथक गुण सील
अचारा॥ कोई पंडित कोइ तापस ज्ञाता॥ कोइ धनवंत सूर कोउ दाता॥ कोउ सरवज्ञ धरमरत कोई॥ सव पर पितहि प्रीति अति होई॥ कोउ पितु
भक्त वचन मन कर्मा॥ सपनेहु न जान न दूसर धर्मा॥ सोइ सुत एय पितु प्रान समाना॥ जद्यपि सो सव भांति अयाना॥ एहि विधि जीव चराचर
जेते॥ त्रिजग देव नर असुर समेते॥ अखिल विश्व यह मोर उपाया॥ सव पर मोरि वरावर दाया॥ तिन्ह मह जे परिहरि मद माया॥ भजहि मोहि मन

वच अरु काया ॥दो॥ पुरुष नपुंसक नारि नर जीव चराचर कोई ॥ सर्व भाव भजु कपट तजि मोहि परम प्रिय सोई ॥सो॥ सत्य कहौ खग तोहि
सुचि सेवक मम प्रान प्रिय ॥ अस विचारि भज मोहि परिहरि आस भरोस सव ॥२३॥चौ॥ कवहु काल नहि व्यापिहि तोही ॥ सुमिरहु भ(
जहु निरंतर मोही ॥ प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊ ॥ जनु पुलकित मन अति हरषाऊ ॥ सो सुख जानै मन अरु काना ॥ नहि रसना पहि
जात वषाना ॥ प्रभु सोभा सुख जानहि नैना ॥ कहि किमि सकहि जिन्है नहि वैना ॥ वहु विधि मोहि प्रवोधि सुख देइ ॥ लगे करै सीसु कौतुक तेइ ॥
सजल नयन कछु मुख करि रूषा ॥ चितै मातु तन लागी भूषा ॥ देषि मातु आतुर उठि धाई ॥ कहि मृदु वचन लिये उर लाई ॥ गोद राषि करावै पै(
पाना ॥ रघुपति चरित ललित कर गाना ॥सो॥ जेहि सुख लागि पुरारि असुभ वेष भूष न धरे ॥ अवधिपुरी नर नारि तेहि सुख मह संतत मग
न ॥सो॥ सोइ सुख लवलेस जिन्ह वलक सपनेउ लहेउ ॥ तिन्हहि नगनहि खगेस ब्रह्म सुखहि सज्जन सुमति ॥२५॥चौ॥ मै पुनि अवधि
रहेउ कछु काला ॥ देषेउ वालविनोद रसाला ॥ राम प्रसाद भक्ति मै पाएउ ॥ प्रभु पद वंदि निज आश्रम आएउ ॥ तव ते मोहि न व्यापी माया ॥ ज
व ते रघुनायक अपनाया ॥ यह सव गुपुत चरित मै गावा ॥ हरि माया जिमि मोहि नचावा ॥ निज अनुभव अव कहौ खगेसा ॥ विनु हरि भजन न(
न जाहि कलेसा ॥ राम कृपा विनु सुनु खगराई ॥ जानि न जाई राम प्रभुताई ॥ जाने विनु न होइ परतीती ॥ विनु परतीत होइ नहि प्रीति ॥ प्रीति विना
नहि भक्ति दृढाई ॥ जिमि खगपति जल की चिकनाई ॥सो॥ विनु गुर होइ न ज्ञान ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥ गावहि वेद पुरान सुख कि लहै हरि भक्ति

उत्तर० विनु॥सो॥कोउविश्रामकिपावतातसहजसंतोषविनु॥चलैकिजलविनुनावकोटिजतनपचिपचिमरिय॥८९॥चौ॥विनुसंतोषनका
२२ मनसाही॥कामअछतसुखसपनेहुनाही॥रामभजनविनुमिटइकिकामा॥थलविहूनतरुकवहिकिजामा॥विनुविज्ञानकिसमता
आवै॥कोउअवकासकिनभविनुपावै॥सरधाविनुभक्तिनहिहोई॥विनुमहिगंधकिपावैकोई॥विनुतपतेजकिकरविस्तारा॥जलविनुहोइ
किरससंसारा॥सीलकिमिलैविनाशिवकाई॥विनुहरिरूपनतेजगोसाई॥निजसुखविनुमनहोइकिथीरा॥परसकिहोइविहीनसरीरा॥
कौनौसिद्धिकिविनुविस्वासा॥विनुहरिभजनकिभवभयनासा॥दो॥विनुविस्वासभक्तिनहितेहिविनुद्रवैनराम॥रामकृपाविनुसपनेहु॥
मननलहैविश्राम॥सो॥असविचारिमतिधीरतजिकुतरकसंसैसकल॥भजहुरामरघुवीरकरुणाकरसुंदरसुखद॥९०॥चौ॥निजमति
सरिसनाथमैगाई॥प्रभुप्रतापमहिमाखगराई॥कहीनकछुकरिजुगुतिविशेषी॥इहसवमैनिजनैनन्हदेषी॥महिमानामरूपगुणगाथा
सकलअमितअनंतरघुनाथा॥निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहि॥निगमसेषशिवपारनपावहि॥तुम्हहिआदिखगमसकप्रजंता॥नभउडा राम
हिनहिपावहिअंता॥तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा॥तातकवहुकोउपावकिथाहा॥रामकामशतकोटिसुभगतन॥दुर्गमकोटिअमि २२
तअरिमर्दन॥शक्रकोटिशतसरिसविलासा॥नभशतकोटिअमितअवकासा॥दो॥मरुतकोटिशतविपुलवलरविशतकोटिप्रकाश
शशिशतकोटिसोसीतलसमनसकलसवत्रास॥दो॥कालकोटिशतसरिसअतिदुस्तरदुरगदुरंत धर्मकोटिशतसरिससमदुराधरषभ

गवान॥१४१॥चौ॥प्रभुअगाधिशतकोटिपताला॥शमनकोटिशतसरिसकराला॥तीरथअमितकोटिशतपावन॥नामअखिल
अघपुंजनसावन॥हिमिगिरिकोटिअचलरघुवीरा॥सिंधुकोटिशतसरिसगंभीरा॥कामधेनुशतकोटिसमाना॥सकलकामदाय
कभगवाना॥सारदकोटिअमितचतुराई॥विधिशतकोटिसृष्टिनिपुनाई॥विष्णुकोटिशतपालनकरता॥रुद्रकोटिशतसमसंहरता॥ध
नदकोटिशतसमधनवाना॥मायाकोटिप्रपंचनिधाना॥धराधरनशतकोटिअहीसा॥निरवधिनिरुपमप्रभुजगदीसा॥छं॥निरुपमनउ
पमाअमितरामसमाननिगमागमकहै॥जिमिकोटिशतखद्योतसमरविकहतअतिलघुतालहै॥एहिभांतिनिजुनिजमतिविलाससमुनीसहरि
हिवषानहीं॥प्रभुभावगाहकअतिकृपालसप्रेमसुनिसुखपावहीं॥दो॥रामअमितगुणसागरथाहकिपावैकोइ॥संतनसोजसकछुसुनेउ
तुम्हैसुनावोसोई॥सो॥भाववस्यभगवानसुखनिधानकरुणाभवन॥तजिममतामद मानभजियसदासीतारमन॥१७३॥चौ॥सु
निभसुंडिकेवचनसुहाए॥हरषितखगपतिपंखफुलाए॥नैननीरमनअतिहरषाना॥श्रीरघुवीरप्रतापउरआना॥पाछिलिमोहसमु
झिपछिताना॥ब्रह्मअनादिमनुजकरिजाना॥पुनिपुनिकागचरनसिरनावा॥जानिरामसमप्रेमवढावा॥गुरुविनुभवनिधितरैकि
कोई॥जौविरंचिशंकरसमहोई॥संसैसर्प्पग्रसेउमोहिताता॥दुखदलहरिकुतर्कवहुवाता॥तवसरूपगारुडरघुनायक॥मोहिजियाए
जनसुखदायक॥तवप्रसादममभोहनसाना॥रामरहस्यअनुपमजाना॥दो॥ताहिप्रसंसिविविधिविधिसीसनाइकरजोरि॥वचनवि

उत्तर० नीतसप्रेममृदुवोलेगरुडवहोरि ।।दो।। प्रभुअपनेअविवेकतेवूझौंस्वामीतोहि ।। कृपासिंधुसादरकहहुजानिदासनिजमोहि ।।९५।। चौ।।
२३ तुमसरवज्ञतज्ञतमपारा ।। सुमतिसुसीलसकलआचारा ।। ज्ञानविरतिविज्ञाननिवासा ।। रघुनायककेतुमप्रियदासा ।। कारनकवनदेहयह
पाई ।। तातसकलमोहिकहोवुझाई ।। रामचरितसरसुंदरस्वामी ।। पाएहुकहाकहहुनभगामी ।। नाथसुनामैअससिवपाहीं ।। महाप्रलैहुंनासत
वनाहीं ।। मिथ्यावचननईश्वरकहहीं ।। सोमोरेमनसंसेअहहीं ।। अगजगजीवनागनरदेवा ।। नाथसकलजगकालकलेवा ।। अंडकटाहअमित
लैकारी ।। कालसदादुरंतक्रमभारी ।। सो।। तुमैनव्यापतकालअतिकरालकारनकवन ।। मोसनकहहुकृपालज्ञानप्रभावकिजोगवल
दो।। प्रभुतवआश्रमआएमोरमोहभ्रमभाग ।। कारनकवनसोनाथसवकहहुसहितअनुराग ।।९६।। चौ।। गरुडगिरासुनिहरषेउकागा
वोलेउउमासहितअनुरागा ।। धन्यधन्यतवमतिउरगारी ।। प्रश्नतुम्हारिमोहिअतिप्यारी ।। सुनितवप्रश्नसप्रेमसोहाई ।। वहुतजनमकीसुधिमोहि
आई ।। अवनिजकथाकहौंमैगाई ।। तातसुनहुसादरमनलाई ।। जपतपमखसमदमव्रतदाना ।। विरतिविवेकविरतिविज्ञाना ।। सवकरफलरघु राम
पतिपदप्रेमा ।। तेहिविनुकोउनपावइछेमा ।। एहितनरामभक्तिमैपाई ।। तातेमोहिममताअधिकाई ।। जेहितेनिजकछुस्वारथहोइ ।। तिहिपरममता २३
करसवकोई ।। सो।। पन्नगारिअसनीतिश्रुतिसंमतसज्जनकहहि ।। अतिनीचौसोप्रीतिकरियजानिनिजपरमहित ।। सो।। पाटकीटतेहोइ
तातेपाटंवररुचिर ।। कृमिपालैसवकोइपरमअपावनप्रानसम ।।९७।। चौ।। स्वारथसकलजीवकहंएहा ।। मनक्रमवचनरामपदनेहा ।।

सोइपावनसोइसुभगसरीरा ॥ जोतनुपाइभजियरघुवीरा ॥ रामविमुखलहिविधिसमदेही ॥ कविकोविदनप्रसंसहितेही ॥ रामभक्तिएहितन
उरजामी ॥ तातेमोहिपरमप्रियस्वामी ॥ तजौनतननिजइछामरना ॥ तनविनुभजनवेदनहिवरना ॥ प्रथममोहमोहअधिकविगोवा ॥ रामवि
मुखसुखकवहिनसोवा ॥ नानाजन्मकर्मपुनिनाना ॥ किएंजोगजपतपमखदाना ॥ कवनिजोनिजन्मोजहनाही ॥ मैरवगेसभ्रमीउंजगमा
ही ॥ देखेउकरिसवकर्मगोसाइ ॥ सुखीनभएउअवहिकिनाई ॥ सुधिमोहिनाथजन्मवहुकेरी ॥ शिवप्रसादमतिमोहनघेरी ॥ दो० ॥ प्रथमज
न्मकेचरितअवकहौसुनहुविहंगेस ॥ सुनिप्रभुपदरतिउपजेजातेमिटहिकलेस ॥ दो० ॥ पूरवकल्पएकप्रभुजुगकलिजुगमलमूल ॥
नरअरुनारिअधर्मरतिसकलसकलनिगमप्रतिकूल ॥ १५१ ॥ चौ० ॥ तेहिकलिजुगकौशलपुरजाइ ॥ जन्मतभएउसूद्रतनपाई ॥ शि
वसेवकमनक्रमअरुवानी ॥ आनदेवनिंदकअभिमानी ॥ धनमदमतपरमवाचाला ॥ उग्रवुद्धीउरदंभविसाला ॥ जदपिरहेउरघुपतिर
जधानी ॥ तदपिनप्रभुमहिमाकछुजानी ॥ अवजानामैअवधिप्रभावा ॥ निगमागमपुरानअसगावा ॥ कवनैजन्मअवधिवसकोई ॥ रामपरा
यनसोपरहोई ॥ अवधिप्रभावजानतवप्रानी ॥ जवउरवसहिरामधनुपानी ॥ सोकलिकालकठिनउरगारी ॥ पापपरायनसवनरनारी ॥
दो० ॥ कलिमलग्रसेधर्मसवगुपतभएसदग्रंथ ॥ दंभिननिजमतिकल्पीकरिप्रगटकीन्हवहुपंथ ॥ दो० ॥ भएलोगसवमोहवसलोभग्रसेसुभकर
र्म ॥ सुनुहरिजानज्ञाननिधिकहौकछुककलिधर्म ॥ १५२ ॥ चौ० ॥ वरनधर्मनहिआश्रमचारी ॥ स्रुतिविरोधरतसवनरनारी ॥ द्विजस्रु

उत्तर० तिर्वंचकभूपपरायन॥कोउनहिमाननिगमअनुशासन॥मारगसोइजाकहजोभावा॥पंडितसोइजोगालवजावा॥मिथ्यारंभदंभरतजोई॥ताकहं
२४ संतकहैसवकोई॥सोसयानजोपरधनहारी॥जोकरदंभसोवड आचारी॥जोकहिझूठमसषरीजाना॥कलिजुगसोगुणवंतवषाना॥निराचार
जोस्रुतिपथत्यागी॥कलिजुगसोज्ञानीसविरागी॥जाकेनरवअरुजटाविशाला॥सोतापसप्रसिद्धकलिकाला॥दो॥अशुभवेषभूषणधरेभ
छाभछजुषाहि॥तेजोगीतेसिद्धनरपुजियतकलिजुगमाहि॥१५३॥चौ॥नारिविवसनरसकलगोसाई॥नाचहिनटमर्कटकीनाई॥सूद्रद्विं
जनउपदेसहिज्ञाना॥मेलिजनेउलेहिकुदाना॥सवनरकामलोभरतक्रोधी॥देवविप्रस्रुतिसंतविरोधी॥गुणमंदिरसुंदरपतित्यागी॥भजहिनारि
परपुरुषअभागी॥सोहागिनिविभूषणहीना॥विधवनकेश्रृंगारनवीना॥गुरसिषवधिरअंधकरलेरवा॥एकनसुनइएकनहिदेषा॥हरैशिष्य
धनसोकनहरइ॥तेगुरघोरनरकमहपरई॥मातपितावालकनिवोलावै॥उदरभरैसोधर्मसिषावै॥दो॥ब्रह्मज्ञाननविनुनारिनरकरहिनदूसरि
वात॥कौडिलागिविमोहवसकरहिविप्रगुरघात॥दो॥वादहिसूद्रद्विजनसनहमतुमसेकछुघाटि॥जानहिब्रह्मसुविप्रवरआंषिदिषावहिडा राम
टि॥१५५॥चौ॥परत्रियलंपटकपटसयाने॥मोहद्रोहममतालपटाने॥तेअभेदवादीज्ञानीनर॥देषामैचरित्रकलिजुगकर॥आपुगएअरुति २४
न्हहूघालहि॥जेकहुंसतमारगप्रतिपालहि॥कल्पकल्पभरिइकनरका॥परहिजोदूरवहिस्रुतिकरतरका॥येवरणाधमतेलिकुम्हारा॥स्व
पचकिरातकौलकलवारा॥नारिमरीगृहसंपतिनासी॥मूंडमुंडाइभएसंन्यासी॥तेविप्रन्हसेनआपुपुजावहि॥उभयलोकनिजहाथनसावहि॥वि

प्रनिरत्तरलोलुपकामी॥ निराचारसठवृषलीस्वामी॥ सूद्रकरहिजपतपव्रतदाना॥ वैठिवरासनकरहिपुराना॥ सवनरकलपितकरहिअचा
रा॥ जाइनवरनिअनीतिअपारा॥ दो॥ भएवरणसंकरसकलभिन्नसेतसवलोग॥ करहिपापदुखपावहिभैरुजसोकवियोग॥ दो॥ श्रुतिसंव
तहरिभक्तिपथसंजुतविरतिविवेक॥ तिहिनचलहिनरमोहवसकल्पहिपंथअनेक॥ २५६॥ चौ॥ वहुदामसवारहिधामपती॥ विषआहरिलीनिर
रहीविरती॥ तपसीधनवंतदरिद्रगृही॥ कलिकौतुकतातनजातकही॥ कुलवंतिनिकासहीनारिसती॥ ग्रहआनहिचेरिनिवेरिगती॥ सुतमानहिमातप
पितानवलो॥ अवलोननदीषनहिजवलो॥ ससुरारिपिआरिलगीजवते॥ रिपुरूपकुटुंवभएतवते॥ नृपपापपरायनधर्मनही॥ करिदंडविडंवप्रजानित
ही॥ धनवंतकुलीनमलीनअपी॥ द्विजचीजनेउउघारतपी॥ नहिमानहिवेदपुरानहिजो॥ हरिसेवकसंतसहीकलिजो॥ कविवृंदउदारदुनीनसुनी
गुणदूखकव्रातनकोपिगुनी॥ कलिवारहिवारदुकालपरे॥ विनुअन्नदुखीसवलोगमरे॥ दो॥ सुनुषगेसकलिकपटहठदंभदुखपाषंड॥ मान
मोहमारादिमदव्यापिरहेव्रह्मंड॥ दो॥ तामसधर्मकरहिनरजपतपमखव्रतदान॥ देवनवरषहिंधरनितववएनजामहिधान॥ २५७॥ चौ॥ अ
वलाकचभूषणभूरिछुधा॥ धनहीनदुखीममतावहुधा॥ सुखचाहहिमूढनधर्मरता॥ मतिथोरिकठोरिनकोमलता॥ नरपीडितरोकनभोगकही
अभिमानविरोधअकारणही॥ लघुजीवनसंवतपंचदसा॥ कलपंतननासगुमानअसा॥ कलिकालविहालकियेमनुजा॥ नहिमानतकोउअनुजातनु
जा॥ नहितोषविचारनसीतलता॥ सवजातिकुजातिभएमगता॥ इरिषापरुषानरलोलुपता॥ भरिपूरिरहीममताविगता॥ सवलोगवियोगविसोकहए

उत्तर० वरणाश्रमधर्म अचारगए॥ दमदान दया नहि जानपनी॥ जडतापरवंचनताति घनी॥ तनुपोषक नारिनरा सगरे॥ परनिंदक जेजगमोवगरे॥ दो॥
२५ सुनकुव्याल अरिकाल कलिमल अवगुण आगार॥ गुणौ वहुत कलिकाल कर विनुप्रयास विस्तार॥ दो॥ कृतद्वापर त्रेता वहुत एजामरव अरुजो
ग॥ जोगति होइ सु कलि हरिनामते पावहि लोग॥१५८॥ चौ॥ कृतजुग सव जोगी विज्ञानी॥ करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी॥ त्रेतात्धविधि यज्ञ नर करही
प्रभुहि समर्पी कर्म भव तरही॥ द्वापर करि रघुपति पदपूजा॥ नर भवतराहि उपायन दूजा॥ कलिजुग केवल हरिगुणगाहा॥ गावत नर पावहि भवथाहा॥
कलिजुग जोग न यज्ञ न ज्ञाना॥ एक अधार रामगुणगाना॥ सव भरोस तजि जो भज रामहि॥ प्रेम समेत गाव गुणग्रामहि॥ सो भव तर कछु संसय नाही॥
नामप्रताप प्रगट कलि माही॥ कलि कर एक पुनीत प्रतापा॥ मानस पुन्य होहि नहि पापा॥ दो॥ कलियुग सम जुग आन नहि जो नर करि विस्वास
गाइ राम गुणगण विमल भव तर विनहि प्रयास॥ दो॥ प्रगट चारि पद धर्म के कलि मह एक प्रधान॥ जेनकेनविधि दीने दान करहि कल्यान॥१६॥
चौ॥ कृतजुग धर्म होहि सव केरे॥ हृदय राममाया के प्रेरे॥ सुद्धसत्व समता विज्ञाना॥ कृतप्रभाव प्रसंन मन जाना॥ सत्व वहुत रजु कछु रति कर्मा॥ स राम
वविधि सुख त्रेताकर धर्मा॥ वहुरजु स्वल्प सत्व कछु तामस॥ द्वापर धर्म हर्ष भव मानस॥ तामस वहुत रजोगुण थोरा॥ कलिप्रभाव विरोध चहुवोरा॥ २५
वुधजुग धर्म जानि मन माही॥ तजि अधर्म रति धर्म कराही॥ कालधर्म नहि व्यापहि नाही॥ रघुपति चरन प्रीति अति जाही॥ नटकृत विकट कपट खगए
राया॥ नट सेवकहि न व्यापइ माया॥ दो॥ हरिमाया कृत दोषगुण विनु हरिभजन न जाहि॥ भजिय राम सव काम तजि अस विचारि मन माहि॥ दो॥

तिहि कलिजुग महु वरष वहु वसो अवधि विहंगेस॥ परो दुकाल विपति वस तव मै गएउ वदेस॥६३॥ चौ॥ गएउ उजेन सुनहु उरगारी॥ दीन मली
न दरीद्र दुखारी॥ गए काल कछु संपति पाइ॥ तहं पुनि करौ शंभु शिव काई॥ विप्र एक वैदक शिव पूजा॥ करै सदा तिहि काम न दूजा॥ परम साधु पर
मारथ विंदक॥ शंभु उपासक नहि हरि निंदक॥ तिहि सेएउं मै कपट समेता॥ द्विज दयाल अति नीति निकेता॥ वाहिज नम्र देषा मुहि साई॥ विप्र पढा
व पुत्र की नाई॥ शंभु मंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा॥ सुभ उपदेस विविध विधि कीन्हा॥ जपो मंत्र शिव मंदिर जाई॥ हृदय दंभ अहमिति अधिकाई॥ दो
॥ खल मल संकुल मति नीच जाति वस मोह॥ हरिजन द्विज देषे जरो करो विष्न कर द्रोह॥ सोरठा॥ गुर नित मोहि प्रवोध दुखित देषि आचरन मम
मोहि उपजै अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावइ॥६४॥ चौ॥ एक वार गुर लीन्ह वुलाई॥ मोहि नीति वहु भांति सिषाइ॥ शिव सेवा कर फल सुत सोई
अविचल भक्ति राम पद होई॥ रामहि भजहि तात शिव धाता॥ नर पावर कि केतिक वाता॥ जासु चरन अज शिव अनुरागी॥ तासु द्रोह सुख चहसि
अभागी॥ हरि कह हर सेवक गुरु कहीउ॥ सुनि षगनाथ हृदय मम दहीउ॥ अधम जाति मै विद्या पाए॥ भएउ यथा अहि दूध पियाए॥ मानी कुटिल
कुभागि कुजाती॥ गुर कर द्रोह करौं दिन राती॥ अति क्रपाल गुर स्वल्प न क्रोधा॥ पुनि पुनि मोहि सिषाव सुवोधा॥ जिहि ते नीच वडाइ पावा॥ सो प्रथमहि
हति ताहि नसावा॥ धूम अनल संभव सुनु भाई॥ तिहि वुझाव घन पदवि पाई॥ रज मग परी निरादर रहई॥ सव कर पद प्रहार नित सहई॥ मरुत उडाव प्र
थम तिहि भरई॥ पुनि न्रप नैन कीरिटन्ह परई॥ सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा॥ वुध नहि करहि अधम कर संगा॥ कवि कोविद गावहि असि

उत्तर० नीती॥खलसनकलहनखलसनप्रीती॥उदासीननितरहहिगोसांई॥खलपरिहरियस्वानकीनाई॥मैखलहृदयकपटचतुराई॥सु
२६ रहितकहैनमेहिसोहाई॥दो॥एकवारहरमंदिरेजपतरहेउहरनाम॥गुरआएअभिमाननतेउठिनहिकीन्हप्रनाम॥दो॥सोदयाल
लकछुकहिउनहिउरनरोसलवलेस॥अतिअघगुरअपमाननतेसहिनहिसकेउमहेस॥१६॥चौ॥मंदिरमाझभईनभवानी॥रे
हतभाग्यअज्ञअभिमानी॥जद्यपितववगुरकेंवहिक्रोधा॥अतिकृपालचितस्वल्पकवोधा॥तदपिश्रापसठदेहौतोही॥नीतिविरोधसोहा
नमोही॥जौनहिदेउंकरौरवलतोरा॥भ्रष्टहोइश्रुतिमारगमोरा॥जेसठगुरुसनईरिषाकरही॥रौरौनर्ककोटियुगपरही॥त्रिजगजो
निपुनिधरहिसरीरा॥अयुतजन्मभरिपावहिपीरा॥वैठिरहिसिअजगरइवपापी॥सर्प्पहोसिषलमलअतिव्यापी॥महाविटपषोडरम
ह्रुजाई॥रहुअधमाधमअधगतिपाई॥दो॥कीन्हहाहाकारगुरसुनिदारुणशिवश्राप॥कंपितमोहिविलोकिअतिउरउपजापरि
ताप॥दो॥करिदंडवतसप्रेमद्विजशिवसन्मुखकरजोरि॥विनयकरतगदगदगिरासमुझिघोरगतिमोरि॥अस्तोत्रछंद॥नमामिस राम
मीशाननिर्वानरूपं॥विभुंव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं॥निजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं॥चिदाकासमाकाशवासंभजेहं॥निराकारमोंकारमू २६
लंतुरीयं॥गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं॥करालंमहाकालकालंकृपालं॥गुणागारसंसारपारंनतोहं॥तुषाराद्रिसंकासगौरंगंभीरं॥मनोभू
तकोटिप्रभाश्रीसरीरं॥स्फुरन्मौलिकल्लोलनिचारुगंगा॥लसद्भालवालेंदुकंठेभुजंगा॥चलत्कुंडलंभ्रूत्रिनेत्रंविशालं॥प्रसन्नाननंनील

कंठदयालं ॥ मृगाधीसचर्माम्बरंमुंडमालं ॥ एयंसंकरंसर्वनाथंभजामि ॥ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशं ॥ अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं ॥ त्रिश
धाशूलनिर्मूलनंशूलपानी ॥ भजेहंभवानीपतीभावगम्यं ॥ कलातीतकल्यानकल्पांतकारी ॥ सदासज्जनानंददातापुरारी ॥ चिदानंदसं
दोहमोहापहारी ॥ प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी ॥ नयावद्उमानाथपादारविंदं ॥ भजंतीहलोकेपरेवानराणां ॥ नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशं
प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं ॥ नजानामिजोगंजपंनैवपूजा ॥ नतोहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यं ॥ जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं ॥ प्रभोपाहिआ
पन्नमामीशशंभो ॥ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतोषये ॥ येपठंतिनराभक्त्यातेषांशंभुप्रसीदति ॥ दो ॥ सुनिबिनतीसरबज्ञशिवदेखिविप्रअनुरा
ग ॥ पुनिमंदिरनभवानीभइजोद्विजवरमाग ॥ दो ॥ जौप्रसन्नप्रभुमोहिपरजानिदीनअतिनेहु ॥ निजपदभक्तिसुदेइप्रभुपुनिदूसरवरदेहु ॥
दो ॥ तवमायावसजीवजडसंततफिरैभुल्लान ॥ तिहिपरक्रोधनकरियप्रभुकृपासिंधभगवान ॥ दो ॥ संकरदीनदयालअवइहिपरहोहु
कृपाल ॥ श्रापानुग्रहहोइजिहिनाथथोरेहिकाल ॥ १०८ ॥ चौ ॥ इहिकरहोइपरमकल्याना ॥ सोइकरहुअवकृपानिधाना ॥ विप्रगिरा
सुनिपरहितसानी ॥ एवमस्तुइतिभैनभवानी ॥ जदपिकीन्हइहिदारुणपापा ॥ मैपुनिदीन्हक्रोधकरिश्रापा ॥ तदपितुम्हारिसाधुतादे
षी ॥ करिहौइहिपरकृपाविशेषी ॥ क्षमासीलजेपरउपकारी ॥ तेद्विजमोहिप्रियजथाखरारी ॥ मोरश्रापद्विजव्यर्थनजाइहि ॥ जन्मसह
स्त्रअवसियहपाइहि ॥ जन्मतमरतदुसहदुखहोई ॥ इहिस्वल्पौनहिव्यापिहिसोई ॥ कवनेहुजन्ममिटिहिनहिज्ञाना ॥ सुनहुसूद्रम

उत्तर० मवचनप्रमाना॥रघुपतिपुरीजन्मतवभइऊँ॥पुनितैंममसेवामनदैऊँ॥पुरीप्रभावअनुग्रहमोरे॥रामभक्तिउपजिहिउरतोरे॥सुनुमम
२१ चनसत्यअवभाई॥हरितोषणव्रतद्विजशिवकाई॥अवजनिकरहिविप्रअपमाना॥जानिसुसंतअनंतसमाना॥इंद्रकुलिसममसूलवि
शाला॥कालदंडहरिचक्रकराला॥जोइन्हकरमारानहिमरई॥विप्रद्रोहपावकसोजरई॥असविवेकराषिहुमानमाही॥तुमकहुंजगदुर्ल
भकछुनाही॥औरौएकआसिषामोरी॥अप्रतिहतगतिहोइहितोरी॥दो॥सुनुशिववचनहरषिगुरुएवमस्तुइतिभाषि॥मोहिप्रबोधिउग
इउगएहशंभुचरणउरराषि॥दो॥प्रेरितकालविधिगिरिजाइभयोमैंव्याल॥पुनिप्रयासविनुसोतनुतजेउगएकछुकाल॥दो॥जोतनुध
रौंतजौंसोइअनाआसहरिजान॥जिमिनूतनपटपहिरहीनरपरिहरहिपुरान॥दो॥शिवराषीश्रुतिनीतिअरुमैंनहिपावकलेस॥एहिविधि
धरेउंविविधतनज्ञाननगएउखगेस॥७६॥चौ॥त्रजगजोनिनरजोतनधरऊँ॥तहंतहरामभजनअनुसरऊँ॥एकसूलमोहिविसरनकाऊँ॥
गुरुकरकोमलसीलसुभाऊँ॥धर्मदेहद्विजकैमैंपाई॥सुरदुर्लभपुराननश्रुतिगाई॥षेलौंतहांवालकनमीला॥करौंसकलरघुनायकलीला॥ राम
प्रौढभएमोहिपितापढावा॥समुझौंसुनौंगुनौंनहिभावा॥मनतेसकलवासनाभागी॥केवलरामचरनलयलागी॥कहुषगेसअसकौन २१
अभागी॥षरीसेवसुरधेनुहित्यागी॥प्रेममगनमोहिकछुनसोहाई॥हारेउपितापढाइपढाई॥भएकालवसजवपितुमाता॥मैंवनगइउ
भजनजनत्राता॥जहंजहंविपिनमुनीस्वरपावौं॥आश्रमजाइजाइसिरुनावौं॥बूझौंतिनहिरामगुणगाहा॥कहहिसुनौंहरषितषगनाहा॥सु

नतफिरोहरिगुणअनुवाद॥ अव्याहतगतिसंभुप्रसादा॥ छूटीत्रिविधईषणागाढी॥ एकलालसाउरअतिबाढी॥ रामचरनवारिजजवदेषो
तवनिजजन्मसुफलकरिलेषो॥ जेहिपूछौंसोमुनिअसकहई॥ ईश्वरसर्वभूतमयअहई॥ निर्गुणमतनहिमोहिसुहाइ॥ सगुणब्रह्मरतिमन
अधिकाई॥ दो॥ गुरकेवचनसुरतिकरोरामचरनमनुलाग॥ रघुपतिजसगावतफिरौछणछिननवअनुराग॥ दो॥ मेरुसिषिरवटछाया
यामुनिलोमसआसीन॥ देषिचरणसिरुनाएउँकहेउँवचनअतिदीन॥ दो॥ सुनिममवचनविनीतमृदुमुनिकृपालषगराज॥ मुहिसादर
पूछतभएद्विजआएकेहिकाज॥ तवमैंकहाकृपायतनतुमसरवज्ञसुजान॥ सगुणब्रह्मआराधनामोहिकहोभगवान॥ १८०॥ चौ॥ तव
मुनीसरघुपतिगुणगाथा॥ कहेकछुकसादरखगनाथा॥ ब्रह्मज्ञानरतमुनिविज्ञानी॥ मोहिपरमअधिकारीजानी॥ लागेकरनब्रह्मउपदेसा॥
अजअद्वैतअगुणहृदयेसा॥ अकलअनीहअनामअरूपा॥ अनुभवगम्यअषंडअनूपा॥ मनगोतीतअमलअविनासी॥ निर्विकारनिर्व
दिसुखरासी॥ सोतइताहितोहिनहिभेदा॥ वारिवीचिइवगावहिवेदा॥ विविधभांतिमोहिमुनिसमुझावा॥ निर्गुणमतममहृदयनआवा॥ पुनिमैं
कहेउनाइपदसीरा॥ सगुणउपासनकहोमुनीसा॥ रामभक्तिजलमममनमीना॥ किमविलगाइमुनीसप्रवीना॥ सोउपदेसकहोक
रिदाया॥ निजनयनन्हिदेषौरघुराया॥ भरिलोचनविलोकिअवधेसा॥ तवसुनिहौनिर्गुणउपदेसा॥ मुनिपुनिकहिहरिकथाअनूपा॥ षं
डिसगुणमतअगुणनिरूपा॥ तवमैनिर्गुणमतकरिदूरी॥ सगुणनिरूपौंकरिहठभूरी॥ उत्तरप्रतिउत्तरमैंकीन्हे॥ मुनितनभएक्रोधकेचा

उत्तर० सुनुप्रभुबहुतअवज्ञाकीए॥उपजाक्रोधज्ञानहूकेहीये॥अतिसंघरषणजौंकरकोई॥अनलप्रगटचंदनतेहोई॥दो॥वारहिवारसकोपमुनि
२८ करैनिरूपणज्ञान॥मैंअपनेमनवैठितवकरौंविविधअनुमान॥दो॥क्रोधकिद्वैतवुद्धिविनुद्वैतकिविनुअज्ञान॥मायावसिपरिछिन्नजडजी
वकिईससमान॥१०२॥चौ॥कवहूंनदुखसवकरहितताके॥तिहिकिदरीद्रपरसमणिजाके॥परद्रोहीकीहोइनिसंका॥कामीपुनिकिरहहि
यकलंका॥वंसकिरहहिजअनभलकीन्हे॥कर्मकिहोहिसरूपहिचीन्हे॥काहूहिसुमतिकिखलसंगजामी॥सुभगतिपावकिपर
त्रयगामी॥भवकिपरहिपरमातमविंदक॥सुखीकिहोहिकवहुहरनिंदक॥राजाकिरहइनीतिविनुजाने॥अघकिरहइहरिच
रितवषाने॥पावनजसकिपुन्यविनुहोई॥विनुअघअजसकिपावैकोई॥लाभकिकछुहरिभक्तिसमाना॥जिहिगावहिश्रुतिसंतपुरा
ना॥हानिकिजगइहिसमकछुभाई॥भजियनरामहिनरतनुपाई॥अघकिविनुतामसकछुआना॥धर्मकिदयासरिषहरिजाना॥इहि
विधिअमितजुक्तिमनगुनऊं॥मुनिउपदेसनसादरसुनऊं॥पुनिपुनिसगुणपक्षमैरोपा॥तवमुनिवोलेवचनसकोपा॥मूढपरमसिषदेत राम
नमानसि॥उत्तरप्रतिउत्तरवहुआनसि॥सत्यवचनविस्वासनकरई॥वायसइवसवहीसनडरई॥सठसपक्षतवहृदयविसाला॥सप २८
दिहोहिपंछीचंडाला॥लीन्हआपमैंसीसचढाइ॥नहिकछुभयनदीनताआई॥दो॥तुरतभयोमैकागतवपुनिमुनिपदसिरुनाई॥सुमिरि
रिरामरघुवंशमनिहरषितचल्योउडाइ॥दो॥उमाजुरामचरननिरतविगतकाममदक्रोध॥निजप्रभुमैदेषहिजगतकासनकरहिविरोध

८४॥चौ॥सुनुखगेसरिषिनहिकछुदूषण॥उरप्रेरकरघुवंशविभूषण॥कृपासिंधमुनिमतिकरिभोरी॥लीन्हिप्रेमपरीक्षामोरी॥मनवच
क्रममुहिनिजजननजाना॥मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना॥रिषिममसहजसीलतादेषी॥रामचरनविस्वासविसेषी॥अतिविस्मैपुनिपुनिपछि
ताई॥सादरमुनिमुहिलीन्हवुलाइ॥ममपरितोषविविधिविधिकीन्हा॥हरषितराममंत्रतवदीन्हा॥वालकरूपरामकरध्याना॥कह्योमो
हिमुनिकृपानिधाना॥सुंदरसुखदमोहिअतिभावा॥जोप्रथमहिमैतुमहिसुनावा॥मुनिमुहिकछुककालनहराषा॥रामचरितमानस
तवभाषा॥सादरमुहियहकथासुनाई॥पुनिवोलेमुनिगिरासुहाई॥रामचरितसरगूत्यसुहावा॥संभुप्रसादतातमैपावा॥तोहिनिजभक्त
रामकरजानी॥तातेमैसवकह्योवषानी॥रामभक्तिजिन्हकेउरनाही॥कवहुनतातकहियतिहिपाही॥मुनिमोहिविविधिभातिसमुझावा॥मै
सप्रेममुनिपदसिरनावा॥निजकरकमलपरसिममसीसा॥हरषितआसिषदीन्हमुनीसा॥रामभक्तिअविरलउरतोरे॥वसिहिसदाप्रसाद
अवमोरे॥दो॥सदारामप्रियहोवतुमसुभगुणभवनअमान॥कामरूपइछामरणज्ञानविरागनिधान॥दो॥जिहिआश्रमतुमवसवपुनिसु
मिरतश्रीभगवंत॥व्यापिहितहंनअविद्याजोजनएकप्रजंत॥८५॥चौ॥कालकरमगुणदोषसुभाउ॥कछुदुखतुमहिनव्यापिहिकाउ॥
रामरहस्यललितविधिनाना॥गूत्यप्रगटइतिहासपुराना॥विनुश्रमतुमजानवसवसोउ॥नितनवनेहरामपदहोउ॥जोइछाकरिहौमन
माही॥हरिप्रसादकछुदुर्लभनाही॥सुनिमुनिआसिषसुनुमतिधीरा॥ब्रह्मगिराभइगगनगंभीरा॥एवमस्तुतववचमुनिज्ञानी॥यह

उत्तर० २९

मम भक्त कर मम न बानी ॥ सुनि नभगिरा हर्ष मुहि भएऊ ॥ प्रेम मगन तब संसै गएऊ ॥ करि बिनती मुनि आयसु पाई ॥ पद सरोज पुनि पुनि सि
रु नाई ॥ हरष सहित इहि आश्रम आएउं ॥ प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पाएउं ॥ इहां बसत मुहि सुनु खग ईसा ॥ बीते कल्प सात अरु बीसा ॥ करौं सदा
रघुपति गुन गाना ॥ सादर सुनहि विहंग सुजाना ॥ जब जब अवधपुरी रघुबीरा ॥ धरहि भक्त हित मनुज सरीरा ॥ तब तब जाइ राम पुर रहऊं ॥ सिसु
लीला बिलोकि सुख लहऊं ॥ पुनि उर राखि राम सिसु रूपा ॥ निज आश्रम आयो खगभूपा ॥ कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई ॥ काग देह जिहि का
रन पाई ॥ कही तात सब प्रश्न तुम्हारी ॥ राम भक्ति महिमा अति भारी ॥ दो ॥ ताते यह तन मोहि प्रिय भयो राम पद नेह ॥ निज प्रभु दरसन पाइ उं गएउ
सकल संदेह ॥ दो ॥ भक्ति पक्ष हठ करि रहेउ दीन्ह महामुनि स्राप ॥ मुनि दुर्लभ वर पाएउ देषहु भजन प्रताप ॥ ११८ ॥ चौ ॥ जे असि भक्ति जानि परिहर
ईं ॥ केवल ज्ञान हेतु श्रम करईं ॥ ते जड़ कामधेनु ग्रह त्यागी ॥ षोजत आक फिरहि पय लागी ॥ सुनु षगेस हरि भक्ति बिहाई ॥ जे सुख चाहहि आ
न उपाई ॥ ते सठ महासिंधु बिनु तरनी ॥ पैरि पार चाहहि जड़ करनी ॥ सुनि भसुंडि के बचन भवानी ॥ बोले गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥ तव प्रसाद प्र राम
भु मम उर माहीं ॥ संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥ सुनेउ पुनीत राम गुन ग्रामा ॥ तुमरि कृपा लहिउं विश्रामा ॥ एक बात प्रभु पूछौं तोही ॥ कहो २९
बुझाइ कृपानिधि मोही ॥ कहहि संत मुनि वेद पुराना ॥ नहि कछु दुर्लभ ज्ञान समाना ॥ सो मुनि तुम सन कहिउ गोसाईं ॥ नहि आदरेहु भ
क्तिकि नाईं ॥ ज्ञानहि भक्तिहि अंतर केता ॥ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥ सुनि उरगारि बचन सुख माना ॥ सादर बोले काग सुजाना ॥ भ

क्तिहिज्ञानहिनहिकछुभेदा॥ उभयहरहिभवसंभवषेदा॥ नाथमुनीसकहहिकछुअंतर॥ सावधानसोसुनुविहंगवर॥ ज्ञानविरागजोगविज्ञाना॥
येसवपुरुषसुनहुहरिजाना॥ पुरुषप्रतापप्रवलसवभाती॥ अवलाअवलसहजजडजाती॥ दो॥ पुरुषत्यागिसकनारिहिजोविरक्तमुनिधीर॥
नतकामीविषयाविवसविमुखजुपदरघुवीर॥ सो॥ सोमुनिज्ञाननिधानमृगनैनीविधुमुखनिरषि॥ विकलहोहिहरिजानविष्णुनारिमाया॥
प्रगट॥१९०॥ चौ॥ इहानपक्षतातकछुराषो॥ वेदपुरानसंतमतभाषो॥ मोहननारिनारिकेरूपा॥ पन्नगारियहनितिअनूपा॥ मायाभक्तिसुन
हुतुमदोउ॥ नारिवर्गजानैसवकोउ॥ पुनिरघुवीरहिभक्तिपियारी॥ मायाषलनीर्तकिविचारी॥ भक्तिहिसानुकूलरघुराया॥ तातेतिहिडरपति
अतिमाया॥ रामभक्तिनिरुपमनिरुपाधी॥ वसैजासुउरसदाअवाधी॥ तिहिविलोकिमायासकुचाइ॥ करिनसकैकछुनिजप्रभुताई॥ असविचा
रिजोमुनिविज्ञानी॥ जाचहिभक्तिसकलगुनखानी॥ दो॥ यहरहस्यरघुनाथकरवेगिनजानैकोई॥ जोजानैरघुपतिकृपासपनेहुनमोहन
होइ॥ दो॥ औरौज्ञानअरुभक्तिकरभेदसुनहुपरवीन॥ जोसुनिहोइरामपदप्रीतिसदाअविछीन॥१९१॥ चौ॥ सुनहुतातयहकथाकहानी
समुझतवनैनजाइवषानी॥ ईश्वरअंसजीवअविनासी॥ चेतनअमलसहजसुषरासी॥ सोमायावसभयोगोसांई॥ वधोकीरमर्कटकीनाई॥ ज
डचेतनहिग्रंथपरिगाई॥ जदपिमृषाछूटतकठिनाई॥ तवतेजीवभयोसंसारी॥ छूटनग्रंथिनहोइसुखारी॥ श्रुतिपुरानवहुकीन्हउपाई॥ छूट
नअधिकअधिकअरुझाई॥ जीवहृदयतममोहविशेषी॥ ग्रंथिनछूटपरैकिमिदेषी॥ असमंयोगइसजवकरई॥ तवहुकदाचितसोनिरवरई

उत्तर० सात्विक स्रधा धेनु सुहाई ॥ जौ हरि कृपा हृदय वस आई ॥ जप तप व्रत जम नियम अपारा ॥ जो श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥ तेइ तृन हरित चरै जव गा

३० ई ॥ भाव वछ सिसु पाइ पेन्हाई ॥ नोइ निवीर्त्ति पात्र विस्वासा ॥ निर्मल मन अहीर निज दासा ॥ परम धर्म मय पय दुहि भाई ॥ अवटै अनल अकाम

वनाइ ॥ तोष मरुत तव छमा जुडावै ॥ धृति सम जावन देइ जमावै ॥ मुदिता मथै विचार मथानी ॥ दम अधार रजु सत्य सुवानी ॥ तव मथि काढि लेइ नव

नीता ॥ विमल विराग सुभग सुपुनीता ॥ दो० ॥ जोग अगिनि करि प्रगट तव कर्म सुभासुभ लाइ ॥ बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाइ ॥ दो० ॥

तव विज्ञान निरूपणी बुद्धि विसद घृत पाइ ॥ चित्त दिया भरि धरै दृढ समता दिवटि वनाइ ॥ दो० ॥ तीनि अवस्था तीनि गुण तिहि कपास ते काढि ॥ तूल

तुरीय सवारि कै वाती करै सुगाढि ॥ सो० ॥ इहि विधि लेसे दीप तेज रासि विज्ञान मय ॥ जातहि तासु समीप जरहि मदादिक सलभ सव ॥ ११७ ॥ चौ० ॥ सो

हमस्मि इति वीर्त्ति अखंडा ॥ दीपसिषा सो परम प्रचंडा ॥ आतम अनुभव सुख सुप्रकासा ॥ तव भव मूल भेद भ्रम नासा ॥ प्रवल अविद्या कर परिवारा

मोह आदि तम मिटै अपारा ॥ तव सो बुद्धि पाइ उजियारा ॥ उर गृह वैठि ग्रंथि निरुआरा ॥ छोरण ग्रंथि पाव जौं सोई ॥ तौ यह जीव कृतारथ होई ॥ राम

छोरत ग्रंथि जानि खगराया ॥ विघन अनेक करै तव माया ॥ रिद्धि सिद्धि प्रेरै वहु भाई ॥ बुद्धिहि लोभ दिषावै आई ॥ कल वल छल करि जाइ स ३०

मीपा ॥ अंचल वात बुझावै दीपा ॥ होइ बुद्धि जौं परम सयानी ॥ तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥ जौं तिहि विघ्र बुद्धि नहि बाधी ॥ जौ वहोरि सुर क

रहि उपाधी ॥ इंद्रि द्वार झरोषा नाना ॥ तहं तहं सुर वैठे करि थाना ॥ आवत देषहि विषय वयारी ॥ ते हठि देहि कपाट उघारी ॥ तव सु प्रभंजन उर गृह जा

ई॥तवहिदीपविज्ञानवुझाई॥ग्रंथिनछूटिमिटासुप्रकासा॥वुद्धिविकलभइविषयवतासा॥इंद्रिसुरन्हनज्ञानसुनाइ॥बिषयभोगपरप्रीतिसदा
ई॥विषयसमीरवुद्धिकृतभोरी॥तिहिविधिदीपकिवारवहोरी॥दो॥तवफिरिजीवविविधविधिपावैसंसृतकलेस॥हरिमायाअतिदुस्तरातरिनहि
जाइखगेस॥दो॥कहतकठिनसमुझतकठिनसाधनकठिनविवेक॥होइघुनाछरन्याएजौपुनिपरत्यूहअनेक॥१९८॥चौ॥ज्ञानपंथकृपा
नकैधारा॥परतखगेसहोइदुइफारा॥जोनिर्विघ्नपंथानिरवहई॥सोकैवल्यपरमपदलहई॥अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद॥संतपुरानिगम
आगमवद॥रामभजनसोमुक्तिगुसाई॥अनइछितआवैवरिआई॥जिमिथलविनुजलरहिनसकाई॥कोटिभांतिकिनकरियउपाई॥तथामो
क्षसुखसुनुखगराई॥रहिनसकइहरिभक्तिविहाइ॥असविचारिहरिभक्तसयाने॥मुक्तिनिरादरभक्तिलोभाने॥भक्तिकरतविनुजतनप्रयासा॥
संसृतिमूलअविद्यानासा॥भोजनकरियतृपितहितलागी॥जिमिसोअसनपचैजठरागी॥असिहरिभक्तिसुगमसुखदाई॥कोअस
मूढनजाहिसुहाई॥दो॥सेवकसेव्यभावविनुभवनतरियउरगारि॥भजहुरामपदपंकजअससिद्धांतविचारि॥दो॥जोचेतनकहेजडक
रैजडहिकरैचेतन्य॥अससमरथरघुनायकहिभजहिजीवतेधन्य॥२०॥चौ॥कहिउंज्ञानसिद्धांतवुझाइ॥सुनहुभक्तिमणिकिप्रभुताई॥रा
मभक्तिचिंतामणिसुंदर॥वसएगरुडजाकेउरअंतर॥परमप्रकासरूपदिनराती॥नहिकछुचहियदियाघृतवाती॥मोहदरिद्रनिकटन
हिआवा॥लोभवातनहिताहिवुझावा॥प्रवलअविद्यातममिटिजाइ॥जारइसकलसलभसमुदाई॥खलकामादिनिकटनहिजाई॥वसै

उत्तर २०
३१

भक्तिजाकेउरमाही ॥ गरलसुधासमअरिहिततहोई ॥ तिहिमणिविनुसुखपावनकोरी ॥ व्यापहिमानसरोगनभारी ॥ तिन्हकेवससवजीवदुखा
री ॥ रामभक्तिमणिउरवसजाके ॥ दुखलवलेसनसपनेहुताके ॥ चतुरासिरोमणिजेजगमाही ॥ जोमणिलागिसुजतनकराही ॥ सोमणिजदपि
प्रगटजगअहई ॥ रामकृपाविनुनहिकौलहइ ॥ सुगमउपायपाइवेकेरे ॥ नरहतभागिदेहिभटभेरे ॥ पावनपर्वतवेदपुराना ॥ रामकथारुचिरा
करनाना ॥ मर्मिसज्जनसुमतिकुदारी ॥ ज्ञानविरागनयनउरगारी ॥ भावसहितषोजेजोप्रानी ॥ पावभक्तिमणिसवसुखषानी ॥ मोरेमनप्र
भुअसविस्वासा ॥ रामतेअधिकरामकेदासा ॥ रामसिंधुघनसज्जनधीरा ॥ चंदनतरुहरिसंतसमीरा ॥ सवकरफलहरिभक्तिसुहाई ॥ सो
विनुसंतनकाहूपाई ॥ असविचारजोकरसतसंगा ॥ रामभक्तिहरिसुलविहंगा ॥ दो ॥ ब्रह्मपयोनिधिमंदराज्ञानसंतसुरआहि ॥ कथासु
धामथिकाढहिभक्तिमधुरताजाहि ॥ दो ॥ विरतिचर्मअसिज्ञानमदलोमोहरिपुमारि ॥ जयपाइयसोहरिभगतिदेषुखगेसविचारि ॥ २०२ ॥ चौ
पुनिसप्रेमवोलेखगराऊ ॥ जौकृपालमुहिऊपरभाऊ ॥ नाथमोहिनिजसेवकजानी ॥ सप्तप्रस्नममकहौवषानी ॥ प्रथमहिकहोनाथम राम
तिधीरा ॥ सवतेदुर्लभवनसरीरा ॥ वडदुखकवनकवनदुखभारी ॥ सोसंछेपहिकहोविचारी ॥ संतअसंतमरमतुमजानहु ॥ तिन्हकर ३१
सहजसुभाववषानहु ॥ कवनपुन्यश्रुतिविदितविसाला ॥ कहहुकवनअघपरमकराला ॥ मानसरोगकहहुसमुझाई ॥ तुमसरवज्ञ
कृपाअधिकाई ॥ तातसुनहुसादरअतिप्रीती ॥ मैसंक्षेपकहौयहनीती ॥ नरतनुसमनहिकवनिउदेही ॥ जीवचराचरजाचतजेही ॥ नर्क

स्वर्गअपवर्गनिसेनी॥ ज्ञानविरागभक्तिसुभदेनी॥ सोतनुधरीहरिभजहिनजेनर॥ होहिविषयरतमंदमंदतर॥ कांचकएकबदल्लेनरल्ले
ही॥ करतेडारिपरसमनिदेही॥ नहिदरिद्रसमदुखजगमाही॥ संतमिलनसमसुखजगनाही॥ परउपकारवचनमनकाया॥ संतसहजसुभा
वखगराया॥ संतसहहिदुखपरहितलागी॥ परदुखहेतुअसंतअभागी॥ भूर्जतरूनसमसंतकृपाला॥ परहितनितसहविपतिविसाला॥ स
नइवखलपरवंधनकरई॥ षालकढाइविपतिसहिमरई॥ खलविनुस्वारथपरअपकारी॥ अहिमूषकइवसुनुउरगारी॥ परसंपदाविना
सिनसाही॥ जिमिससिहतिहिमउपलविलाही॥ दुष्टहृदयजगआरतहेतू॥ यथाप्रसिद्धअधमग्रहकेतू॥ संतउदयसंततसुखकारी॥ विश्वसुखद
जिमिइंदुतमारी॥ परमधर्मश्रुतिविदितअहिंसा॥ परनिंदासमअघनगिरीसा॥ हरिगुरनिंदकदादुरहोइ॥ जन्मसहस्त्रपावतनसोई॥ द्वि
जनिंदकवहुनरकभोगकरि॥ जगजन्मैवायससरीरधरि॥ सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानी॥ रौरौनरकपरहितेप्रानी॥ होहिउलूकसंतनि
दारत॥ मोहनिसाप्रियज्ञानभानुगत॥ सबकैनिंदाजेजडकरही॥ तेचमगादुरहोइअवतरही॥ सुनहुतातअबमानसरोगा॥ जिन्हतेदुख
पावहिसबलोगा॥ मोहसकलव्याधिनकरमूला॥ तिन्हतेपुनिउपजहिभवसूला॥ कामवातकफलोभअपारा॥ क्रोधपीत्तनितछाती
जारा॥ प्रीतिकरहिजौतीनीभाई॥ उपजैसन्यपातदुखदाई॥ विषयमनोरथदुर्गमनाना॥ तेसबसूलनामकोजाना॥ ममतादादुकंडुइरिषाइह
रषविषादगरहवहुताइ॥ परसुखदेषिजरनिसोई॥ दुष्टकुष्टतामनकुटिलाई॥ अहंकारअतिदुखदडवरूआ॥ दंभकपटमनमाननहरूआ

उत्तर० तृस्ना उदरवृद्धि अतिभारी॥त्रिविधईषणातरुणतिजारी॥जुगविधिज्वरमत्सरअविवेका॥कहेलगिकहौकुरोगअनेका॥दो॥एकव्याधिव
३२ सनरमरहिंयेअसाधिवहुव्याधि॥पीडहिसंततजीवकहंसोकिमिलहैसमाधि॥दो॥नेमधर्मआचारतपज्ञानयज्ञतपदान॥भेषजपुनिकोटिन्ह
नहिरोगजाहिहरिजान॥२०४॥चौ॥इहिविधिसकलजीवजगरोगी॥सोकहरषभयप्रीतिवियोगी॥मानसरोगकछुकमैगाए॥हैसवकेलषिविरलैपा
ए॥जानेतेछीजहिकछुपापी॥नासनपावहिजनपरितापी॥विषयकुपथ्यपाइअंकुरे॥मुनिहुहृदयकानरवापुरे॥रामकृपानासहिंभवरोगा॥जो
असभांतिवनैसंजोगा॥सदगुरवैदवचनविस्वासा॥संजमयहनविजयकैआसा॥रघुपतिभक्तिसजीवनिमूरी॥अनुपानश्रद्धाअतिरूरी॥
इहिविधिभलिहिरोगनसाही॥नाहितजतनकोटिनहिजाही॥जानियतवमनविरुजगोसांइ॥जवउरवलविरागअधिकाई॥सुमतिछुधावाढैनि
तनई॥विषयआसदुर्वलतागई॥विमलज्ञानजलजवसुनहाई॥तवरहरामभक्तिउरछाई॥शिवअजसकसनकादिकनारद॥जेमुनिब्रह्म
विचारविसारद॥सवकरमतषगनायेकएहा॥करियरामपदपंकजनेहा॥श्रुतिपुरानसवग्रंथकहाही॥रघुपतिभक्तिविनासुखनाही॥कमठपीठ राम
जामहिवरुवारा॥बंधासुतवरुकाहुहिमारा॥फूलहिनभवरुवहुविधिफूला॥जीवनलहसुखहरिप्रतिकूला॥तृषाजाइवरुमृगज ३२
लपाना॥वरुजामहिसससीसविषाना॥अंधकारवरुरविहिनसावै॥रामविमुखसुखजीवनपावै॥हिमतेअनलप्रगटवरुहोई॥विमु
खरामसुखपावनकोई॥दो॥वारिमथेघृतहोइवरुसिकतातेवरुतेल॥विनुहरिभजननभवतरियसिद्धांतअपेल॥दो॥मसकाहिकरै ह

विरंचिप्रभुत्र्प्रजहिमसकतेहीन॥ असविचारितजिसंसयरामभजहिप्रवीन॥ श्लो॥ विनिश्चितंवदामितेनुअन्यथावचासिमे॥ हरिंनरामजंतिये
सुदुस्तरंतरंतिते॥१॥ चौ॥ कहेनाथहरिचरितअनूपा॥ व्याससमासस्वमतिअनत्रूपा॥ श्रुतिसिद्धांतइहैउरगारी॥ राममभजियसवकामविसारी
प्रभुरघुपतितजिसेइयकाही॥ मोहिसेसठपरममताजाही॥ तुमविज्ञानरूपनहिमोहा॥ नाथकीन्हमोपरअतिछोहा॥ पूछेहुरामकथाअ
तिपावनि॥ सुकसनकादिसंभुमनभावनि॥ सतसंगतिदुर्लभसंसारा॥ निमिषदंडभरिएकोवारा॥ देषुगरुडनिजहृदयविचारी॥ मैरघुवीर
भजनअधिकारी॥ सकुनाधमसवभातिअपावन॥ प्रभुमुहिकीन्हविदितजगपावन॥ दो॥ आजुधन्यमैधन्यअतिजद्यपिसवविधिहीन॥ नि
जजानेउराममुहिसंतसमागमकीन्ह॥ दो॥ नाथयथामतिभाषउंराषिउंनहिकछुगोइ॥ चरितसिंधुरघुनाथकरथाहकिपावइकोइ॥२०८॥
चौ॥ सुमिरिरामकेगुणगननाना॥ पुनिपुनिहरषभसुंडसुजाना॥ महिमानिगमनेतिकहिगाई॥ अतुलितवलप्रतापप्रभुताई॥ शिवअ
जपूज्यचरणरघुराया॥ मोपरकृपापरमम्रदुलाई॥ अससुभावकहुंसुनोनदेषौं॥ किहिरवगेसरघुपतिसमलेषौं॥ साधकसिद्धविमुक्त
उदासी॥ कविकोविदकृतज्ञसन्यासी॥ जोगीसूरसुतापसज्ञानी॥ धर्मनिरतपंडितविज्ञानी॥ तरहिनविनुसेऐंममस्वामी॥ रामनमामिन
मामिनमामी॥ सरनगऐंमोसेअघरासी॥ होइसुद्धनमामिअविनासी॥ दो॥ जासुनामभवभेषजहहरणघोरत्रयसूल॥ सोकृपालमोहि
तोहिपरसदारहैअनकूल॥ दो॥ सुनिभसुंडिकेवचनसुभदेषिरामपदनेह॥ वोलेप्रेमसहितगिरागरुडविगातसंदेह॥२११॥ चौ॥ मैकृतकृ

उत्तर० त्यभइउँतववानी॥सुनिरघुवीरभक्तिरससानी॥रामचरननूतनरतभईउ॥मायाजनितविपतिसवगईउ॥मोहजलधिवोहिततुमभए॥मो
३३ केहनाथविविधसुखदए॥मोपहिहोइनप्रतिउपकारा॥वंदौतवपदवारहिवारा॥पूरणकामरामअनुरागी॥तुमसमतातनकोउवडभागी॥सं
तविटपसरितागिरिधरनी॥परहितहेतुसवनिकैकरनी॥संतहृदयनवनीतसमाना॥कहाकविनपैकहैनजाना॥निजपरतापद्रवैनव
नीता॥परदुखद्रवहिसुसंतपुनीता॥जीवजन्मसुफलममभइउ॥तवप्रसादसंसयसवगइउ॥जानेहुसदामोहिनिजकिंकर॥पुनिपु
निउमाकहैविहंगवर॥दो॥तासुचरणसिरुनाइकरिप्रेमसहितमतिधीर॥गएगरुडवैकुंठतवहृदयराखिरघुवीर॥दो॥गिरिजासंतसमागम
नसमनलाभकछुआन॥विनुहरिकृपानहोइसोगावहिवेदपुरान॥१२३॥चौ॥काहेउँपरमपुनीतइतिहासा॥सुनतश्रवनछूटहिभव
फासा॥प्रणतकल्पतरुकरुणापुंजा॥उपजैप्रीतिरामपदकंजा॥मनक्रमवचनजनितअघजाई॥सुनहिजुकथाश्रवनमनलाई॥तीर्थ
रटनसाधनसमुदाई॥जोगविरागज्ञाननिपुनाई॥नानाकर्मधर्मव्रतदाना॥संजमदमजपतपमखनामा॥भूतदयाद्विजगुरुसेवकाई॥विद्या
विनयविवेकवडाई॥जहलगिसाधनवेदवखानी॥सवकरफलहरिभक्तिभवानी॥सोरघुनाथभक्तिश्रुतिगाई॥रामकृपाकाहूइकपाई॥दो॥ राम
मुनिदुर्लभहरिभक्तिनरपावहिविनहिप्रयास॥जेयहकथानिरंतरसुनहिमानिविस्वास॥१२४॥चौ॥सोसरवज्ञगुणीसोज्ञाता॥सोमहिमंडित ३३
पंडितदाता॥धर्मपरायनसोकुलत्राता॥रामचरनजाकरमनुराता॥नीतिनिपुनसोपरमसयाना॥श्रुतिसिद्धांतनीकतिहिजाना॥सोकविको

विरतसोनरधीरा॥ जोछलछाडिभजहिरघुवीरा॥ धन्यदेससोजहसुरसरी॥ धन्यनारिपतिव्रतअनुसरी॥ धन्यसुभूपनीतिजोकरई॥ धन्यसुद्विजह
रिभक्तिनटरई॥ सोधनुधन्यप्रथमगतिजाकी॥ धन्यपुन्यरतमतिसोपाकी॥ धन्यघरीसोजवसतसंगा॥ जन्मधन्यद्विभक्तिअभंगा॥ दो॥ सोकुलधन्य
उमासुनोजगतपूज्यसुपुनीत॥ श्रीरघुवीरपरायनजिहिनरउपजविनीत॥२५॥ चौ॥ मतिअनुरूपकथामैभाषी॥ जद्यपिप्रथमगुप्तकरिराषी॥ तवम
नप्रीतिदेषिअधिकाई॥ तोमैरघुपतिकथासुनाई॥ यहनकहियसठहिहठसीलहि॥ जोमनलाइनसुनहरिलीलहि॥ कोहियनलोभिहिक्रोधि
हिकामिहि॥ जोनभजैसचराचरस्वामीहि॥ द्विजद्रोहिनसुनाइयकवहू॥ सुरपतिसरिसहोइनृपजवहू॥ रामकथाकेतेअधिकारी॥ जिन्हके
सतसंगतिअतिप्यारी॥ गुरपदप्रीतिनीतिरतजेई॥ द्विजसेवकअधिकारीतेई॥ ताकहुयहविशेषसुखदाइ॥ जाहिप्रानप्रीयश्रीरघुराई॥ दो॥ राम
चरनजेचहहिअथवापदनिर्वान॥ भावसहिततेहरिकथाकरैश्रवणपुटपा॥२६॥ चौ॥ रामकथागिरिजामैवरनी॥ कलिमलसमनमनोमलहर
नी॥ संसृतरोगसजीवनिमूरी॥ रामकथागावहिश्रुतिसूरी॥ इहिमहुरुचिरसप्तसोपाना॥ रघुपतिभक्तिकेरपंथाना॥ अतिहरिकृपाजाहिपर
होइ॥ पाउदेइइहिमारगसोई॥ मनकामनासिद्धिनरपावा॥ जोयहकथाकपटतजिगावा॥ कहहिसुनहिअनुमोदनकरही॥ तेगोपदइवभवनि
धितरही॥ सुनिसवकथाहृदयअतिभाई॥ गिरिजावोलिगिरासुहाई॥ नाथकृपाममगतसंदेहा॥ रामचरनउपजानवनेहा॥ दो॥ मैकृतकृत्यभइउ
अवतवप्रसादविस्वेस॥ उपजिराममभक्तिदृढवीतेसकलकलेस॥२७॥ चौ॥ यहसुभसंभुउमासंवादा॥ सुषसंपादनसमनविषादा॥ भवभंजनगं

उत्तर० ३४ जनसंदेहा॥जनरंजनसज्जनप्रियएहा॥रामउपासकजेजगमाही॥इहिसमप्रियतिन्हकेकछुनाही॥रघुपतिकृपायथामतिगावा॥मैयहपावन
चरितसुहावा॥इहिकलिकालनसाधनदूजा॥जोगजज्ञजपतपव्रतपूजा॥रामहिसुमिरियगाइयरामहि॥संततसुनियरामगुणग्रामहि॥जासुपतित
पावनबडबाना॥गावहिकविश्रुतिसंतपुराना॥ताहिभजहिमनतजिकुटिलाई॥रामभजेगतिकिहिनहिपाई॥छं॥पाइनगतिकिहिपतितपावन
रामजपिसुनुसठमना॥गनिकाअजामिलव्याधगीधगजादिखलतारेघना॥आभिरयमनकिरातखलस्वपचादिअतिअघरूपजे॥कहि
नामवारकतेपिपावनहोहिराममनामिते॥रघुवंशभूषणचरितयहनरकहहिसुनहिजुगावही॥कलिमलमनोमलधोइविनुश्रमरामधा
मसिधावही॥शतपंचचौपाइमोहरजानिजोनरउरधरै॥दारुणअविद्याजनितपंचविकारश्रीरघुवरहरै॥सुंदरसुजानकृपानिधानअना
थपरकरप्रीतिजो॥सोएकरामअकामहितनिर्वाणप्रदसमआनको॥जाकीकृपालवलेसतेमतिमंदतुलसीदासहू॥पायोपरमविश्राम१
रामसमानप्रभुनाहिनकहू॥दो॥मोसमदीननदीनहिततुमसमानरघुवीर॥असविचारिरघुवंसमणिहरहुविषमभवभीर॥दो॥कामिहि१ राम
नारिपियारिजिमिलोभिहिप्रियजिमिदाम॥तिमिरघुनाथनिरंतरप्रियलागहुमुहिराम॥२१९॥श्लो॥यत्पूर्वंप्रभुणाकृतंसुकविनाश्रीशंभुनादु ३४
र्गमंश्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिसंप्राप्त्यैतुनारायणं॥मत्वातद्रघुनाथनामनिरतःस्वांतस्तमःशांतयेभाषाबंधमिदंचकारतुलसीदासस्तथामा
नसं॥१॥पुण्यंपापहरंसदाशिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदंमायामोहमलापहंसुविमलंप्रेमांबुपूरंशुभं॥श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये

उत्तर० तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यंति नोमानवाः॥२॥इतिश्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अविरलभक्तिसंपादि
३५ नोनामसप्तमः सोपानः संपूर्णः॥७॥ ॥श्रीरामजीसहाय॥रामायनमः॥रामायनमः॥ संवत१८३५कार्त्तिककृस्नद्वितीयागुरुदिने॥॥
लिखितारामरत्नद्विजेनहेसदासवैस्मवपठनार्थं॥मंगलं लेखकानांचपाठकानांचमंगलं मंगलंसर्वलोकानंभूमिर्भूपतिमं
गलं॥१॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥रा
म॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम
राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥रा म॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥रा
म॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥रा म॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम
राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम
राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥रा म॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम राम
राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥ ३५
तैनकंठनीचैरहैकटिवाकीहोयजाय॥वडुतकष्टकरलिषतममराषोभलैवनाय॥१॥अग्निमूढजलतेलतेजोढीलोनरहाय
तोपुस्तकसदाथिररहैषेमकहैसतभाय॥२॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम

सप्तम् सोपान

उत्तर काण्ड